दैनिक

महाराष्ट्र समाचार

संपादक :अकबर खान

राष्ट्रीय हिंदी समाचार पत्र

वर्ष:14 अंक:34 मुंबई, शनिवार,31 अक्टूबर-2026 | E-mail:dailymaharashtrasamachar@gmail.com | मूल्य 3.00 रूपया | पृष्ठ - 06 | RNI.No.MAHHIN/2013/53656

संक्षिप्त समाचार

फिर से जेल जाएंगे बिहार के बाहुबली विधायक अनंत सिंह

● दुलारचंद हत्याकांड में सुप्रीम कोर्ट ने सरेंडर करने को कहा

पटना (एजेंसी)। मोकामा विधायक अनंत सिंह को सुप्रीम कोर्ट से बड़ा झटका लगा है। सुप्रीम कोर्ट ने दुलारचंद हत्याकांड में अनंत सिंह को एक दिसंबर तक सरेंडर करने का आदेश दिया है। आज दुलारचंद हत्याकांड में अनंत सिंह की जमानत रद्द करने की याचिका पर सुप्रीम कोर्ट में सुनवाई थी। सुप्रीम कोर्ट ने अपने आदेश में चार महीने में जांच पूरी करने को कहा है।



दुलारचंद हत्याकांड मामले में अनंत सिंह को पटना हाईकोर्ट से जमानत मिली थी। सुप्रीम कोर्ट में जस्टिस एमएम सुंदरेश और जस्टिस प्रसन्ना बी वराले की बेंच में आज सुनवाई के दौरान अनंत सिंह के वकील ने बताया कि उनके परिवार में 25 नवंबर को शादी है। जिस पर कोर्ट ने उन्हें 1 दिसंबर तक सरेंडर करके जेल लौटने का आदेश दिया है। कोर्ट ने बिहार सरकार को 4 महीने में अपनी जांच पूरी करने कहा है, जिसके बाद अगली सुनवाई होगी। बता दें, बिहार एमएलसी चुनाव में पार्टी लाइन से अलग जाकर जनसुराज के कैंडीडेट के पक्ष में प्रचार करने को लेकर अनंत सिंह को जदयू पार्टी से बाहर कर चुकी है। अनंत सिंह के वकील कुमार हर्षवर्धन ने बताया, अभी हमारे पास ऑर्डर की डिटेल्ड कॉपी नहीं आई है।

जामिया यूनिवर्सिटी में बीस साल बाद होंगे छात्र संघ चुनाव

● प्रशासन ने छात्रों की बात मानी,कहा-16 जुलाई से सेशन 6 हफ्ते के अंदर चुनाव

नई दिल्ली (एजेंसी)। दिल्ली की जामिया मिल्लिया इस्लामिया यूनिवर्सिटी प्रशासन छात्र संघ चुनाव करवाने को तैयार हो गया है। जामिया प्रशासन ने 29 अक्टूबर को एक नया ऑर्डर जारी किया है, जिसमें पहली बार टाइम-बाउंड



डेडलाइन दी गई है। प्रशासन के मुताबिक, 16 जुलाई से एकडेमिक सेशन शुरू होगा। इसके के 6 हफ्तों के भीतर स्टूडेंट्स यूनियन के चुनाव कराए जाएंगे। संविधान पूरा करने की अंतिम तारीख 15 मई 2027 है। जामिया मिल्लिया इस्लामिया प्रशासन ने स्टूडेंट्स यूनियन के संविधान को तय समयसीमा में पूरा करने को कहा है। प्रशासन ने कहा है कि 2 नवंबर से ऑफलाइन क्लासेज फिर शुरू होंगी। इसके अलावा, आंदोलन के दौरान छात्रों पर जो शो-कॉज नोटिस, सस्पेंशन, रस्टिकेशन और कैंपस बैन लगाए गए थे, वे सब वापस लिए जाएंगे।

इंडियन नेवी को मिलेंगे आठ नए कॉर्वेट युद्धपोत

● कैबिनेट ने 40 हजार करोड़ की परियोजना को दी मंजूरी

नई दिल्ली (एजेंसी)। पीएम नरेंद्र मोदी की अध्यक्षता वाली कैबिनेट कमेटी ऑन सिक्योरिटी ने इंडियन नेवी के लिए 8 नए कॉर्वेट युद्धपोत बनाने की मंजूरी दी है। इस परियोजना पर 40 हजार करोड़ से ज्यादा खर्च किए जाएंगे। इन युद्धपोतों में 70 फीसदी से ज्यादा सामान भारत में बनाया जाएगा। इससे देश में रक्षा उत्पादन को बढ़ावा मिलेगा। रिपोर्ट के मुताबिक, पहले युद्धपोत का निर्माण एक साल के भीतर शुरू होने की उम्मीद है। इसे 2030 तक नौसेना को सौंपने का लक्ष्य रखा गया है।

इन 8 युद्धपोतों को सरकारी क्षेत्र की दो कंपनियां बनाएंगी। इनमें कोलकाता की गार्डन रीच शिपबिल्डर्स एंड इंजीनियर्स और गोवा शिपयार्ड लिमिटेड शामिल हैं। दोनों कंपनियों के साथ अगले कुछ दिनों में निर्माण का कॉन्ट्रैक्ट होने की उम्मीद है। रक्षा सूत्रों के मुताबिक, हाल के समय में सरकार के उच्च स्तर पर मंजूरी पाने वाली यह पहली बड़ी रक्षा परियोजना है। इससे



इंडियन नेवी की ताकत बढ़ेगी और देश में युद्धपोत बनाने को बढ़ावा मिलेगा।

इन युद्धपोतों में 70 फीसदी से ज्यादा सामान भारत में बनाया जाएगा। इससे आत्मनिर्भर भारत अभियान और देश में रक्षा उत्पादन को बढ़ावा मिलेगा। सभी 8 युद्धपोत भारत में ही बनाए जाएंगे। इससे सरकार के विजन को भी मजबूती मिलेगी। रक्षा सूत्रों के मुताबिक, अगले 4 से 5 साल में इन युद्धपोतों की डिलीवरी शुरू होने की उम्मीद है।

सहमति से बने हुए संबंध ब्रेकअप के बाद रेप नहीं

● सुप्रीम कोर्ट बोला-हर टूटे रिश्ते को रेप केस में बदलना गलत,आरोपी बरी

नई दिल्ली (एजेंसी)। सुप्रीम कोर्ट ने शुक्रवार को कहा कि वयस्क युवक-युवती के बीच आपसी सहमति से बने शारीरिक संबंधों को ब्रेकअप के बाद रेप नहीं माना जा सकता। कोर्ट ने शादी का वादा करके रिलेशन बनाने के आरोप वाले मामले में एक व्यक्ति को आरोपों से मुक्त कर दिया। जस्टिस बीवी नागरत्ना और जस्टिस आर. महादेवन की बेंच ने कहा कि प्रेम और आपसी सहमति वाले रिश्ते में बने संबंधों को ब्रेकअप के बाद अपराध नहीं बनाया जा सकता। हर टूटे रिश्ते को रेप का मामला बनाना गलत है। हालांकि, अगर शुरुआत से ही शादी का झूठा वादा करके या धोखे से सहमति हासिल की गई थी, तो मामला



अलग होगा। ऐसे मामलों में यह देखना जरूरी है कि क्या सहमति वास्तव में धोखे पर आधारित थी। किसी पुरुष पर सिर्फ इसलिए आपराधिक मामला दर्ज करना उचित नहीं है, क्योंकि उसने रिश्ता खत्म करने का फैसला किया है।

पुलिस कमिश्नर जे. रविंद्र गौड़ की रणनीति ने दिखाया था असर, महज एक सप्ताह में महाराष्ट्र के नागपुर से दबोचा गया था अंशु प्रजापति को

राष्ट्रीय शिखर के समाचार संपादक आरव शर्मा को लॉरेंस बिश्नोई गैंग के नाम पर धमकी देने के मामले में गाजियाबाद पुलिस की थी बड़ी कामयाबी, क्राइम ब्रांच से लेकर विजयनगर पुलिस तक की टीमों ने झोंकी थी ताकत

गाजियाबाद (एजेंसी)। राष्ट्रीय शिखर के समाचार संपादक आरव शर्मा को लॉरेंस बिश्नोई गैंग के नाम पर जान से मारने की धमकी देने के मामले में गाजियाबाद पुलिस ने जिस तेजी और रणनीतिक सूझबूझ के साथ कार्रवाई की, वह पुलिस प्रशासन की सक्रियता का उदाहरण है। पुलिस कमिश्नर जे. रविंद्र गौड़ के नेतृत्व में गाजियाबाद पुलिस ने महज एक सप्ताह के भीतर महाराष्ट्र के नागपुर तक पहुंचकर उस अंशु प्रजापति को गिरफ्तार कर लिया, जिसका नाम धमकी भरे वॉइस नोट में सामने आया था। इस कार्रवाई में क्राइम ब्रांच टीम, स्वाट टीम गाजियाबाद और विजयनगर थाना पुलिस की अलग-अलग टीमों को लगाया गया। पुलिस कमिश्नर ने मामले की गंभीरता को देखते हुए टीमों को तत्काल सक्रिय किया और गुजरात तथा महाराष्ट्र की ओर रवाना कर आरोपी की तलाश तेज कराई। इस पूरे घटनाक्रम में पुलिस कमिश्नर जे. रविंद्र गौड़ की कार्यशैली और त्वरित निर्णय लेने की क्षमता विशेष रूप से चर्चा में है। पत्रकार की सुरक्षा से जुड़े संवेदनशील मामले को गंभीरता से लेते हुए उन्होंने जांच को केवल स्थानीय स्तर तक सीमित नहीं रखा, बल्कि दूसरे राज्यों तक पुलिस टीमों को भेजकर आरोपी तक पहुंचने की रणनीति बनाई। लगातार प्रयासों के बाद नागपुर से गिरफ्तारी इस बात का प्रमाण है कि पुलिस ने मामले को प्राथमिकता पर लेकर कार्रवाई की।

हालांकि आरोपी अंशु प्रजापति की गिरफ्तारी के बाद इस प्रकरण में एक ऐसा सवाल सामने आया है, जिसने पूरे मामले की गुत्थी को और उलझा दिया है। दरअसल, धमकी के मामले में 13 अक्टूबर को आरव शर्मा के मोबाइल फोन पर एक हेलो का संदेश आया था। बाद में धमकी भरे वॉइस नोट में अंशु प्रजापति के नाम का उल्लेख किया गया था। गिरफ्तारी के बाद जब पुलिस जांच अधिकारी और आरव शर्मा के परिजनों के सामने आरोपी से 13 अक्टूबर को आए हेलो संदेश के बारे में सवाल किया गया



तो उसने साफ तौर पर इससे इनकार कर दिया। उसने कहा कि यह संदेश उसने नहीं भेजा था। यदि गिरफ्तार आरोपी यह स्वीकार नहीं करता की हेलो का मैसेज उसने नहीं भेजा है तो हो सकता था कि इस मामले का उसकी गिरफ्तारी से ही पटाक्षेप हो जाता, लेकिन उसके इनकार करने में से शक की सूई कहीं और घूम गई।

यही बयान इस पूरे प्रकरण में सबसे महत्वपूर्ण सवाल खड़ा करता है। यदि आरोपी 13 अक्टूबर के हेलो संदेश को भी अपना बताता तो जांच की एक कड़ी सीधे जुड़ सकती थी और मामले की तस्वीर काफी हद तक स्पष्ट हो सकती थी। लेकिन उसके इनकार ने यह सवाल खड़ा कर दिया है कि आखिर 13 अक्टूबर को हेलो संदेश किसने भेजा था? क्या धमकी भरे वॉइस नोट और शुरूआती संदेश के पीछे एक ही व्यक्ति था या इस पूरे घटनाक्रम में कोई अन्य व्यक्ति भी शामिल है?

जांच में सामने आए मोबाइल नंबर और उससे जुड़ी जानकारियों में अंशु प्रजापति के साथ धर्मेश वधैर का नाम भी सामने आने की बात कही गई है। ऐसे में पुलिस के सामने अब केवल गिरफ्तार आरोपी से पूछताछ ही नहीं, बल्कि मोबाइल नंबर, सिम कार्ड, संदेशों और वॉइस नोट के स्रोत की भी गहराई से जांच करने की चुनौती है।

सबसे बड़ा सवाल यह भी है कि क्या धमकी देने वाला व्यक्ति वास्तव में किसी संगठित गिरोह से जुड़ा है या उसने गिरोह का नाम लेकर दहशत फैलाने की कोशिश की? केवल आरोपी की गिरफ्तारी और उसके बयान से इस सवाल का अंतिम जवाब नहीं मिल सकता। इसके लिए तकनीकी साक्ष्यों और अन्य संभावित आरोपियों की भूमिका की निष्पक्ष जांच जरूरी है।

पुलिस कमिश्नर जे. रविंद्र गौड़ के नेतृत्व में गाजियाबाद पुलिस ने एक सप्ताह के भीतर नागपुर से आरोपी को गिरफ्तार कर निश्चित रूप से महत्वपूर्ण सफलता हासिल की है, लेकिन इस कार्रवाई का अगला और सबसे अहम चरण धमकी की पूरी साजिश का पदार्फाश करना है। जब तक 13 अक्टूबर के संदेश का वास्तविक स्रोत, वॉइस नोट भेजने वाले की भूमिका और संभावित अन्य संलिप्त लोगों की पहचान नहीं हो जाती, तब तक आरव शर्मा और उनके परिजनों की सुरक्षा को लेकर चिंता बनी रहेगी। अब निगाहें पुलिस की अगली जांच पर टिकी हैं। उम्मीद है कि पुलिस कमिश्नर के निर्देश पर जांच टीम इस मामले की हर कड़ी को जोड़कर न केवल धमकी देने वाले वास्तविक व्यक्ति तक पहुंचेगी, बल्कि पत्रकार और उसके परिवार को मिल रही जानलेवा धमकी के पीछे की पूरी सच्चाई भी सामने लाएगी।

बनासकांठा में आकर कोई नहीं कहता कि आलू से सोना बनाएंगे

'आलू से सोना' पर पीएम मोदी का कांग्रेस नेता राहुल गांधी पर तंज

बनासकांठा (एजेंसी)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने शुक्रवार को गुजरात के बनासकांठा में कहा कि यहां का आलू दुनियाभर में मशहूर है। उन्होंने तंज कसते हुए कहा, बनासकांठा में आकर कोई नहीं कहता कि आलू से सोना बनाएंगे, क्योंकि यहां के लोग पहले ही आलू से सोना बना रहे हैं। मोदी की सभा में किसानों के बैठने के लिए कुर्सियों की जगह चारपाइयां बिछाई गई थीं। इस पर उन्होंने कहा कि देश के लोगों के लिए यह अजूबा होगा कि एक सभा में सभी लोग चारपाई पर बैठे हैं।



बद्रीनाथ से देहरादून लौट रहा हेलीकॉप्टर क्रैश

● 6 लोग थे सवार, जोशीमठ के पास हुआ हादसा

देहरादून (एजेंसी)। उत्तराखंड के चमोली जिले में बद्रीनाथ धाम से लौट रहे एक हेलीकॉप्टर की जोशीमठ क्षेत्र की पहाड़ी में क्रैश होने की सूचना है। बताया जा रहा है कि हेलीकॉप्टर में 6 लोग सवार थे। सीएम धामी ने हादसे को लेकर दुख जताया है। अब तक मिली जानकारी के अनुसार बद्रीनाथ धाम से लौट रहा हेलीकॉप्टर जोशीमठ में चाई गांव के पास अचानक गायब हो गया। जिसमें पायलट समेत छह यात्री सवार थे। सेना की यूनिट ने डीएम चमोली को इस घटना के बारे में सूचना दी। जिसके बाद से प्रशासन और रेस्क्यू टीमें जुट गई हैं। बताया जा रहा है कि खराब मौसम की वजह से कोई जानकारी नहीं मिल पाई है। प्राप्त जानकारी के अनुसार पायलट से अभी तक संपर्क नहीं हो सका है। सीएम पुष्कर सिंह धामी ने हादसे पर दुख जताया है। सीएम धामी ने सोशल मीडिया पोस्ट के जरिए लिखा कि- चाई गांव, जोशीमठ के निकट हेलीकॉप्टर क्रैश होने की दुर्भाग्यपूर्ण सूचना प्राप्त हुई है।



जिला प्रशासन, आपदा प्रबंधन विभाग, एसडीआरएफ द्वारा संयुक्त रूप से रेस्क्यू ऑपरेशन चलाया जा रहा है। स्वयं भी पूरे घटनाक्रम की निरंतर निगरानी कर रहा हूं। गंभीर रूप से घायलों को तत्काल एयरलिफ्ट कर बेहतर उपचार के लिए हायर सेंटर पहुंचाने के निर्देश दिए हैं।

एक मंच पर नजर आए फडणवीस,उद्धव और राज ठाकरे

● सीएम बोले-इसमें हैरानी की बात नहीं,यह महाराष्ट्र की राजनीतिक परंपरा

मुंबई (एजेंसी)। मुंबई में गुरुवार को एक कार्यक्रम में महाराष्ट्र के सीएम देवेंद्र फडणवीस, शिवसेना (यूबीटी) प्रमुख उद्धव ठाकरे और महाराष्ट्र नवनिर्माण सेना (एमएनएस) प्रमुख राज ठाकरे एक मंच पर नजर आए। यह कार्यक्रम 75 कार्टूनिस्टों के काम और उनके परिचय पर आधारित पुस्तक के विमोचन के लिए आयोजित किया गया था। फडणवीस ने कहा कि महाराष्ट्र में हमेशा से अलग-अलग राजनीतिक दलों के नेताओं के बीच बातचीत और आपसी मेलजोल की परंपरा रही है। इस दौरान फडणवीस ने कहा- मुझे नहीं पता कि कुछ लोग हमें एक मंच पर देखकर हैरान क्यों हुए। हम हैरान नहीं हैं। यह महाराष्ट्र की राजनीतिक परंपरा का हिस्सा है।



अलग-अलग पार्टियों के नेता एक ही कार्यक्रम में शामिल हो सकते हैं, साथ में हंस सकते हैं और चाय भी पी सकते हैं। फडणवीस ने उद्धव ठाकरे का जिक्र करते हुए कहा- 2019 तक जब भी उद्धवजी मुझे बुलाते थे, मैं जाता था। 2019 के बाद उन्होंने फोन नहीं किया। मैं इंतजार कर रहा था। गौरतलब है कि 2019 के महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव के बाद मुख्यमंत्री पद साझा करने के मुद्दे पर भाजपा और अविभाजित शिवसेना के बीच गठबंधन टूट गया था। इसके बाद दोनों दल एक-दूसरे के राजनीतिक प्रतिद्वंद्वी बन गए।

राज ठाकरे बोले-कुछ मंच राजनीति से अलग होते हैं

वहीं, राज ठाकरे ने कहा कि लोग सोच रहे होंगे कि तीनों नेता आज एक मंच पर कैसे आ गए। कुछ मंच ऐसे होते हैं, जहां सभी लोग राजनीति को अलग रखकर एक साथ आते हैं। ऐसे कार्यक्रमों में राजनीति के बजाय कला और संस्कृति पर चर्चा होती है। राज ठाकरे ने आगे कहा कि लोग सोच रहे होंगे कि तीनों नेता आज एक मंच पर कैसे आ गए। कुछ मंच ऐसे होते हैं, जहां सभी लोग राजनीति को अलग रखकर एक साथ आते हैं। ऐसे कार्यक्रमों में राजनीति के बजाय कला और संस्कृति पर चर्चा होती है। इस तरह के मंचों पर अलग-अलग राजनीतिक विचारधारा वाले लोगों का साथ आना स्वाभाविक है। फडणवीस ने पुस्तक 'महाराष्ट्र ची हास्यरेषा' तैयार करने के लिए संपादक प्रशांत कुलकर्णी और ग्रंथाली संस्था को बधाई दी। उन्होंने कहा कि यह संग्रह पुराने कार्टूनों को उनके ऐतिहासिक संदर्भों के साथ सुरक्षित रखने का महत्वपूर्ण काम करता है। इस दौरान फडणवीस ने मजाकिया अंदाज में याद किया कि उन्होंने राज ठाकरे से कहा था कि अगर वह कभी उनका कार्टून बनाएं, तो उनकी नाक थोड़ी बड़ी बनाएं। वहीं, उद्धव ठाकरे ने कहा कि किसी भी कार्टूनिस्ट का ब्रश उसका सबसे बड़ा हथियार होता है। उन्होंने बताया कि बाल ठाकरे के निर्माणाधीन स्मारक में उनके बनाए कार्टून भी रखे जाएंगे। पूर्व मुख्यमंत्री उद्धव ठाकरे ने कार्यक्रम में विमोचित पुस्तक को एक अनमोल खजाना बताया, जिसमें करीब 100 वर्षों का इतिहास समेटा गया है।

सीईसी ज्ञानेश कुमार के खिलाफ महाभियोग कार्यक्रम अब आज होगा

राहुल गांधी बोले-यह विरोध नहीं, संविधान बचाने की लड़ाई है

नई दिल्ली (एजेंसी)। दिल्ली में कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे के आवास पर आज होने वाला 'सड़क पर संसद' कार्यक्रम शनिवार को होगा। राहुल गांधी ने यह जानकारी शुक्रवार को प्रेस कॉन्फ्रेंस में दी। राहुल ने कहा, हमने आज का कार्यक्रम बारिश के कारण कल करने का फैसला किया है। उसके बाद अगले दिन हम रामलीला मैदान पर मार्च करेंगे। हमने इसमें राजनीतिक, छात्र संगठनों और सभी लोगों से आने की अपील है। 'सड़क पर संसद' कार्यक्रम में मुख्य चुनाव आयुक्त ज्ञानेश कुमार के खिलाफ महाभियोग लाया जाएगा। पब्लिक महाभियोग में जनता या राजनीतिक दल किसी संवैधानिक पद पर बैठे व्यक्ति के खिलाफ विरोध जताते हैं। विपक्षी गठबंधन इंडिया ब्लॉक 1 नवंबर को दिल्ली के रामलीला मैदान में 'वोट बचाओ, देश बचाओ' रैली करेगा।



एमएलसी चुनाव भाजपा ने बेईमानी से जीता

सपा नेता धर्मेंद्र यादव ने कहा,पूरा विपक्ष जो लड़ाई लड़ रहा है उसे देश के लोग अब समझ गए हैं। वे समर्थन कर रहे हैं। यूपी में एमएलसी चुनाव में यह भाजपा को अहसास कराया कि वे कितना पीछे हैं। जो सीट वो जीते हैं वो जुगाड़ बेईमानी से जीते हैं। सभी सीटों पर पढ़े लिखे लोगों ने सपा को मजबूत किया। टीएमसी सांसद डेरेक ओ ब्रायन ने कहा,मैं सिर्फ एक बात कहना चाहता हूं। हम सभी इस लड़ाई में साथ हैं। यह राजनीतिक दलों के साथ-साथ आम लोगों की भी लड़ाई है। हम सब मिलकर लड़ेंगे और जीतेंगे।

संपादकीय

आस्था के आसमान में सुरक्षा का सवाल, पहाड़ों में कब थमेगा हवाई हादसों का सिलसिला?

उत्तराखंड की देवभूमि अपनी प्राकृतिक सुंदरता, धार्मिक आस्था और दुर्गम पर्वतीय भूगोल के लिए दुनिया भर में पहचानी जाती है। यहां हर वर्ष लाखों श्रद्धालु बदरीनाथ, केदारनाथ, गंगोत्री और यमुनोत्री धाम के दर्शन करने पहुंचते हैं। श्रद्धालुओं की सुविधा के लिए हेलीकॉप्टर सेवाओं का विस्तार भी हुआ है। निश्चित रूप से इन सेवाओं ने बुजुर्गों, दिव्यांगों और कम समय में यात्रा पूरी करने वाले श्रद्धालुओं को बड़ी राहत दी है, लेकिन जब सुविधा और व्यावसायिक गतिविधियों के बीच यात्रियों की सुरक्षा पीछे छूटने लगे तो व्यवस्था पर गंभीर सवाल उठना स्वाभाविक है। 30 अक्टूबर को बदरीनाथ धाम से देहरादून लौट रहा ट्रांस भारत एविएशन का हेलीकॉप्टर चमोली जिले में जोशीमठ के निकट दुर्घटनाग्रस्त हो गया। इस हादसे ने एक बार फिर उत्तराखंड की हवाई सेवाओं की सुरक्षा व्यवस्था को कठघरे में खड़ा कर दिया है।

प्रारंभिक जानकारी के अनुसार हेलीकॉप्टर ने दोपहर करीब 1 बजकर 14 मिनट पर बदरीनाथ से देहरादून के सहस्त्रधारा हेलीपोर्ट के लिए उड़ान भरी थी। इसमें पायलट सहित छह लोग सवार थे। जोशीमठ घाटी के आसपास पहुंचने के बाद हेलीकॉप्टर का संपर्क टूट गया और उसका पता लगाने वाली प्रणाली ने भी काम करना बंद कर दिया। बाद में चमोली के पर्वतीय क्षेत्र में दुर्घटनाग्रस्त हेलीकॉप्टर का मलबा मिला। हादसे में छह लोगों की जान जाने की पुष्टि सामने आई। इनमें पांच यात्री बेंगलुरु के निवासी बताए गए, जबकि हेलीकॉप्टर के पायलट कैप्टन हिमांशु भी इस दुर्घटना के शिकार हुए। घटना की भयावहता का अंदाजा उन तस्वीरों और वीडियो से लगाया जा सकता है, जिनमें दुर्घटनाग्रस्त हेलीकॉप्टर से धुआं उठता दिखाई दे रहा है। यह केवल एक विमान दुर्घटना नहीं, बल्कि उन परिवारों के सपनों और उम्मीदों का अंत है, जिन्होंने अपने प्रियजनों को सुरक्षित यात्रा के लिए विदा किया था।

इस हादसे की गंभीरता इसलिए और बढ़ जाती है क्योंकि उत्तराखंड में पिछले कुछ समय से मौसम लगातार बिगड़ा हुआ है। बदरीनाथ, केदारनाथ सहित ऊंचाई वाले क्षेत्रों में बर्फबारी हो रही है। कई स्थानों पर बारिश, तेज हवाओं और कम दृश्यता की स्थिति बनी हुई है। मौसम विभाग ने 2 नवंबर तक पर्वतीय क्षेत्रों में बारिश और बर्फबारी की संभावना जताई है। चमोली में 30 अक्टूबर को खराब मौसम को लेकर चेतावनी भी जारी की गई थी। मौसम की परिस्थितियों को देखते हुए आकाश में उड़ान भरने का निर्णय किस स्तर पर और किन मानकों के आधार पर लिया गया, इसकी निष्पक्ष जांच आवश्यक है। यह स्पष्ट करना होगा कि उड़ान से पहले मौसम संबंधी चेतावनियों का कितना आकलन किया गया था और क्या उस समय हेलीकॉप्टर का संचालन सुरक्षित था।

उत्तराखंड नागरिक उड्डयन विकास प्राधिकरण ने दुर्घटना के बाद ट्रांस भारत एविएशन के पूरे बेड़े की उड़ानों पर रोक लगा दी है। सेना, भारत तिब्बत सीमा पुलिस, राष्ट्रीय आपदा मोचन बल, राज्य आपदा प्रतिवादन बल, पुलिस और जिला प्रशासन की टीमें बचाव एवं खोज अभियान में लगाई गईं। दो हेलीकॉप्टरों के माध्यम से हवाई निरीक्षण भी कराया गया। मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने अधिकारियों को आवश्यक निर्देश दिए और पूरे घटनाक्रम की निगरानी की। प्रशासन की तत्परता अपनी जगह महत्वपूर्ण है, लेकिन सवाल यह है कि क्या ऐसी तत्परता दुर्घटना होने से पहले भी दिखाई जाती है? क्या मौसम की चेतावनी के आधार पर समय रहते उड़ानों को रोकने की व्यवस्था पर्याप्त रूप से प्रभावी है? किसी भी दुर्घटना के बाद राहत और बचाव कार्य करना सरकार का दायित्व है, मगर उससे बड़ा दायित्व ऐसी परिस्थितियां पैदा ही नहीं होने देना है जिनमें लोगों की जान जोखिम में पड़े।

पीओके में पाक सेना के खिलाफ उबाल जनता की आवाज दबाने के आरोपों से बढ़ा तनाव



कांतिलाल मांडोत

पाकिस्तान के कब्जे वाले कश्मीर (पीओके) में जनआंदोलन अब केवल महंगाई, सस्ते आटे और बुनियादी सुविधाओं तक सीमित नहीं रह गया है। साढ़े चार महीने से जारी विरोध प्रदर्शनों के बीच जनता और पाकिस्तानी सैन्य प्रतिष्ठान के बीच टकराव की स्थिति गंभीर होती दिखाई दे रही है। मुजफ्फराबाद से लेकर कोटली, रावलाकोट और पुंछ तक लोगों में नाराजगी बढ़ने की खबरें हैं। आंदोलनकारियों का आरोप है कि उनकी मांगों को सुनने और समस्याओं का समाधान करने के बजाय सड़कों पर बंदिशें लगाई जा रही हैं तथा विरोध की आवाज दबाने की कोशिश हो रही है। अवामी आंदोलन के जुलूस पर गोलीबारी और लोगों के घायल होने की खबरों ने स्थिति को और तनावपूर्ण बना दिया है। सवाल यह है कि जिस जनता को सस्ती रोटी, बेहतर स्वास्थ्य सुविधाएं और सुगम आवागमन चाहिए, उसकी मांगों का जवाब टकराव से क्यों दिया जा रहा है?

पीओके में जॉइंट अवामी एक्शन कमेटी के नेतृत्व में चल रहे आंदोलन को लेकर पाकिस्तानी सेना प्रमुख आसिम मुनीर की भूमिका पर भी गंभीर आरोप लगाए जा रहे हैं। आंदोलन को कमजोर करने के लिए जम्मू-कश्मीर यूनाइटेड मूवमेंट नामक संगठन के इस्तेमाल और उसके माध्यम से प्रदर्शनकारियों के सामने गतिरोध पैदा करने के आरोप सामने आए हैं। रिपोर्ट में इस संगठन के साथ लश्कर-ए-तैयबा से जुड़े लोगों के संबंध होने का भी दावा किया गया है। मुजफ्फराबाद में इस संगठन के बैनर तले निकले जुलूस के दौरान अवामी समर्थकों पर गोलीबारी होने तथा कुछ लोगों के गंभीर रूप से घायल होने की बात कही गई है। हालांकि, इन आरोपों की स्वतंत्र पुष्टि आवश्यक है। यदि किसी शांतिपूर्ण आंदोलन को बाधित करने के लिए हथियारबंद लोगों का इस्तेमाल किया गया है, तो यह कानून-व्यवस्था और नागरिकों की सुरक्षा से जुड़ा अत्यंत गंभीर मामला है।

इस पूरे घटनाक्रम का सबसे महत्वपूर्ण पहलू यह है कि जनता की मूलभूत जरूरतें अब राजनीतिक और प्रशासनिक टकराव का रूप लेती दिखाई दे रही हैं। लोगों ने पाकिस्तानी सरकार से सस्ता आटा मांगा था, लेकिन उन्हें सड़कों पर बंदिशों का सामना करना पड़ा। उनका कहना है कि आवागमन बाधित होने से परिवारों के लिए रोजमर्रा की जरूरतें पूरी करना भी मुश्किल हो गया है। महंगाई से जूझ रहे परिवारों के लिए भोजन जुटाना पहले ही चुनौती है। ऐसे में यदि परिवहन और आपूर्ति व्यवस्था प्रभावित होती है, तो सबसे ज्यादा परेशानी गरीब और मध्यमवर्गीय परिवारों को उठानी पड़ती है। शासन की पहली जिम्मेदारी जनता की समस्याओं का समाधान करना है, न कि ऐसी परिस्थितियां पैदा करना जिनमें लोगों की मुश्किलें और बढ़ जाएं। लोगों ने स्वास्थ्य सुविधाओं को लेकर गंभीर चिंता जताई है। कई लोगों को अस्पताल में इलाज नहीं मिल पाया, क्योंकि पीओके से इस्लामाबाद जाने वाले मार्ग बंद था। लोग क्षेत्र में पर्याप्त अस्पतालों की कमी का भी उल्लेख कर रहे है। यह शिकायत उस प्रशासनिक व्यवस्था पर सवाल उठाती है, जिसमें गंभीर मरीजों के लिए समय पर इलाज तक पहुंचना कठिन हो सकता है। सड़कें केवल यातायात के साधन नहीं होतीं, बल्कि वे अस्पताल, शिक्षा, रोजगार और व्यापार से जुड़ने की जीवनरेखा होती हैं। यदि सुरक्षा प्रतिबंधों के कारण आम नागरिकों की आवाजाही प्रभावित होती है, तो प्रशासन को वैकल्पिक व्यवस्था और आपातकालीन सेवाओं की उपलब्धता सुनिश्चित करनी चाहिए। जनता को यह भरोसा मिलना जरूरी है कि संकट के समय शासन उसके साथ खड़ा है। आंदोलन का दायरा अब विद्यार्थियों तक भी पहुंच गया है। मंगलवार को कोटली, रावलाकोट और पुंछ के विश्वविद्यालयों में विद्यार्थियों ने जुलूस निकाले और पाकिस्तानी सेना की वापसी के नारे लगाए। विद्यार्थियों का कहना है कि लगभग साढ़े चार महीने से जारी आंदोलन और उससे पैदा हुई परिस्थितियों ने उनकी पढ़ाई को प्रभावित किया है। शिक्षा किसी भी समाज के भविष्य की बुनियाद होती है। लंबे समय तक शैक्षणिक गतिविधियों में व्यवधान से विद्यार्थियों की परीक्षा, रोजगार और आगे की पढ़ाई पर असर पड़ सकता है। जब युवा अपनी शैक्षणिक समस्याओं के साथ शासन के प्रति असंतोष भी व्यक्त करने लगें, तो इसे केवल कानून-व्यवस्था की समस्या मानकर खारिज नहीं किया जा सकता। उनकी शिकायतों को सुनना और समाधान की दिशा में कदम उठाना जरूरी है। पीओके में उठते असंतोष के बीच आजादी के नारे और पाकिस्तानी सेना के खिलाफ बढ़ती नाराजगी इस बात के संकेत हैं कि आंदोलन का स्वरूप व्यापक होता जा रहा है। हालांकि, इन नारों के समर्थन का वास्तविक दायरा निर्धारित करने के लिए स्वतंत्र और विश्वसनीय जानकारी जरूरी है। फिर भी जनता की शिकायतों को लगातार अनसुना किए जाने से असंतोष बढ़ने की आशंका को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता।

मिठास के नाम पर जहर : त्योहारों में मिलावट का बढ़ता कारोबार



सुनील कुमार महला

दीपावली खुशियों, उमंग, प्रकाश और मिठास का त्योहार है। इस पर्व पर घर-परिवार में मिठाइयों का आदान-प्रदान केवल एक परंपरा नहीं, बल्कि आपसी प्रेम, आत्मीयता और सद्भाव का प्रतीक भी है। दीपावली आने से कई दिन पहले ही बाजार रंग-बिरंगी मिठाइयों से सजने लगते हैं और बाजार में दुकानों पर काजू कतली, बेसन के लड्डू, मोतीचूर, रसगुल्ले, बर्फी, पेड़े और गुलाब जामुन की बहार दिखाई देने लगती है। कभी घरों में भी दीपावली के लिए तरह-तरह के पकवान और मिठाइयां तैयार की जाती थीं, लेकिन बदलती जीवनशैली और व्यस्तता के कारण अब अधिकांश लोग बाजार से ही मिठाइयां खरीदना पसंद करते हैं। यही वह समय है, जब मिठाइयों की मांग अचानक बढ़ जाती है और कुछ मुनाफाखोर इस मांग को कमाई का अवसर बना लेते हैं।विडंबना यह है कि जिस मिठास को हम अपने परिवार और प्रियजनों के साथ बांटने के लिए खरीदते हैं, उसी में मिलावट का खतरा छिपा होता है। मिलावट तो मिलावट, तौल तक में गड़बड़ी की जातीं है और डिब्बे को भी मिठाई के साथ ही तौल दिया जाता है। शुद्ध देसी घी, असली मावे और गुणवत्तापूर्ण दूध से बनी मिठाइयों के नाम पर आज नकली घी, मिलावटी मावा, सिंथेटिक दूध और घटिया खाद्य सामग्री से तैयार मिठाइयां ऊंचे दामों पर बेची जाती हैं। कई बार ग्राहक को यह पता ही नहीं चलता कि वह जिस मिठाई को शुद्ध और स्वादिष्ट समझकर खरीद रहा है, उसमें इस्तेमाल की गई सामग्री उसकी सेहत के लिए कितनी नुकसानदेह हो सकती है। यह केवल उपभोक्ता के साथ आर्थिक धोखाधड़ी नहीं, बल्कि उसके स्वास्थ्य और विश्वास के साथ किया जाने वाला गंभीर अपराध है।

हम सभी जानते हैं कि मिलावट का यह कारोबार केवल मिठाइयों तक ही सीमित नहीं है। दूध, घी, पनीर, मावा, मसाले, तेल, दालें, सूखे मेवे और यहां तक कि रोजमर्रा में इस्तेमाल होने वाले कई खाद्य पदार्थ भी इसकी चपेट में हैं। कहीं दूध में पानी और अन्य रासायनिक पदार्थ मिलाए जाते हैं, तो कहीं पनीर और मावा तैयार करने में गैर-मानक सामग्री का इस्तेमाल होता है। मसालों में रंग और अन्य अवांछित पदार्थ मिलाकर उन्हें आकर्षक बनाया जाता है। खाद्य तेलों में मिलावट और नकली ब्रांडों के नाम पर बिक्री की शिकायतें भी सामने आती रहती हैं। त्योहारों के अवसर पर खाद्य पदार्थों की गुणवत्ता को लेकर सरकारी स्तर पर भी चिंता जताई जाती है। यहां पाठकों को बताता चलूं कि भारतीय खाद्य सुरक्षा एवं मानक प्राधिकरण ने 29 सितंबर 2026 को राज्यों और केंद्रशासित प्रदेशों को पत्र जारी कर नवरात्र और दीपावली के दौरान खाद्य पदार्थों की जांच, निगरानी और नमूने लेने की प्रक्रिया तेज करने के निर्देश दिए। इसमें दूध एवं दुग्ध उत्पादों, मिठाइयों, नमकीन, खाद्य तेल और घी को विशेष निगरानी में रखने को कहा गया लेकिन यहां सवाल यह उठता है कि जब हर साल त्योहारों से पहले ऐसे निर्देश जारी होते हैं, तब भी मिलावट का कारोबार आखिर क्यों नहीं रुकता? इस क्रम में हाल के घटनाक्रम इस समस्या की गंभीरता को उजागर करते हैं। दिल्ली में अक्टूबर 2026 के शुरुआती दिनों में खाद्य सुरक्षा विभाग की कार्रवाई के दौरान 4,100 किलोग्राम से अधिक संदिग्ध मिलावटी मावा और पनीर नष्ट किए जाने की खबर सामने आई। इतना ही नहीं, हाल ही में 29 अक्टूबर को भी दिल्ली के तीन बाजारों में छापेमारी के दौरान करीब 949 लीटर घटिया घी जब्त किया गया। वहीं, हरियाणा के मेवात क्षेत्र में भी लगभग 10 हजार किलोग्राम मिलावटी पनीर जब्त किए जाने की जानकारी सामने आई। राजस्थान की राजधानी जयपुर में भी दीपावली से पहले घटिया मावे और खाद्य तेल की आपूर्ति रोकने के लिए विशेष जांच अभियान चलाने की तैयारी की गई। अधिकारियों ने माना कि त्योहारों में मांग बढ़ने के कारण आसपास के जिलों से बड़ी मात्रा में घटिया मावा बाजार में पहुंचने का खतरा रहता है। इसी तरह उदयपुर में भी 29 अक्टूबर को लसाड़िया क्षेत्र में खाद्य सुरक्षा विभाग की कार्रवाई के दौरान 45 किलोग्राम अस्वच्छ मावा और 7 किलोग्राम घटिया मिठाइयां जब्त कर नष्ट किए जाने की खबर सामने आई। वास्तव में, ये घटनाएं बताती हैं कि मिलावट की समस्या किसी एक शहर, प्रदेश या मिठाई की दुकान तक सीमित नहीं है। यह एक संगठित और व्यापक समस्या का रूप ले चुकी है।

वास्तव में, सबसे चिंताजनक बात यह है कि मिलावटखोरों के हौसले केवल इसलिए बुलंद नहीं हैं कि बाजार में खाद्य पदार्थों की मांग अधिक है, बल्कि इसलिए भी कि उन्हें कानून का पर्याप्त भय नहीं है।यह बात ठीक है कि समय-समय पर छापेमारी होती है, कुछ नमूने भी लिए जाते हैं, कुछ दुकानों से खाद्य सामग्री जब्त होती है और खराब सामग्री नष्ट कर दी जाती है। मीडिया में कार्रवाई की खबरें सुर्खियां बनती हैं, लेकिन कुछ समय बाद सब कुछ पहले जैसा ही हो जाता है। असली जरूरत केवल त्योहारों पर दिखावटी सक्रियता की नहीं, बल्कि पूरे वर्ष निरंतर निगरानी और दोषियों के विरुद्ध ऐसी कठोर कार्रवाई की है, जिससे मिलावट का कारोबार करने वालों में कानून का वास्तविक भय पैदा हो।आज सोशल मीडिया का युग है और सोशल मीडिया के इस दौर में मिलावट के कारोबार की तस्वीरें और वीडियो भी अक्सर सामने आते रहते हैं। कहीं नकली मावा बनाने की प्रक्रिया दिखाई जाती है, तो कहीं रासायनिक पदार्थों से दूध तैयार करने और वनस्पति व अन्य वसा मिलाकर घी बनाने के वीडियो प्रसारित होते हैं। ये वीडियो लोगों को विचलित करते हैं और कुछ समय तक चर्चा का विषय भी बने रहते हैं, लेकिन केवल वीडियो वायरल होने से समस्या का समाधान नहीं हो सकता। ऐसे मामलों की गंभीरता से जांच होनी चाहिए और यदि आरोप सही पाए जाते हैं तो संबंधित लोगों के विरुद्ध तत्काल सख्त कानूनी कार्रवाई होनी चाहिए। आखिर खाद्य सुरक्षा विभाग और प्रशासन की जिम्मेदारी केवल शिकायतों का इंतजार करना नहीं, बल्कि ऐसी गतिविधियों पर पहले से नजर रखना भी है। यहां यह बात भी बिल्कुल सही है कि देश में खाद्य पदार्थों की गुणवत्ता सुनिश्चित करने के लिए कानूनों की कमी नहीं है। खाद्य सुरक्षा एवं मानक अधिनियम, 2006 के तहत असुरक्षित खाद्य पदार्थों के उत्पादन और बिक्री पर गंभीर दंड का प्रावधान है। यदि असुरक्षित खाद्य पदार्थ के सेवन से किसी व्यक्ति को चोट पहुंचती है, गंभीर चोट लगती है अथवा मृत्यु होती है तो अपराध की गंभीरता के अनुसार कारावास और जुर्माने की सजा हो सकती है। मृत्यु के मामले में कम से कम सात वर्ष से लेकर आजीवन कारावास तक का प्रावधान है। इसके बावजूद कानून का प्रभाव तभी दिखाई देगा, जब उसकी निष्पक्षता से पालना हो और दोषियों को समय पर सजा मिले। विदेशों में खाद्य सुरक्षा और उपभोक्ता के स्वास्थ्य को लेकर कई देशों ने सख्त निगरानी व्यवस्थाएं विकसित की हैं। वहां खाद्य पदार्थों की गुणवत्ता, उत्पादन प्रक्रिया, भंडारण और बिक्री तक पर निगरानी रखी जाती है। पाठकों को बताता चलूं कि वैश्विक स्तर पर, यूरोपीय संघ में खाद्य सुरक्षा और उपभोक्ता स्वास्थ्य को लेकर दुनिया के सबसे सख्त कानून और निगरानी व्यवस्थाएं हैं। गौरतलब है कि यूरोपियन फूड सेफ्टी अथॉरिटी एहतियाती सिद्धांत' पर काम करती है, जिसका अर्थ है कि किसी भी खाद्य योजक, रसायन या नए उत्पाद को तब तक बाजार में बिकने की अनुमति नहीं दी जाती, जब तक कि उसका सुरक्षित होना वैज्ञानिक रूप से 100त्न साबित न हो जाए। यही कारण है कि दुनिया के कई अन्य हिस्सों में धड़ल्ले से इस्तेमाल होने वाले रसायनों, कीटनाशकों, कृत्रिम रंगों और जेनेटिकली मॉडिफाइड फसलों पर यूरोप में पूरी तरह से प्रतिबंध है। यूरोपीय देशों (विशेषकर जर्मनी और फ्रांस) के अलावा जापान और ऑस्ट्रेलिया में भी खाद्य मानकों, पैकेजिंग और मिलावट को लेकर अत्यंत कठोर कानून लागू हैं। हमारे देश में भी ऐसी व्यवस्था को और प्रभावी बनाने की आवश्यकता है। खाद्य सुरक्षा अधिकारियों की पर्याप्त नियुक्ति, आधुनिक जांच प्रयोगशालाएं, मोबाइल खाद्य परीक्षण वाहन, नियमित निरीक्षण और प्रयोगशालाओं से समयबद्ध जांच रिपोर्ट मिलना जरूरी है। विशेष रूप से उन क्षेत्रों और प्रतिष्ठानों पर निगरानी रखी जानी चाहिए, जहां बड़े पैमाने पर मावा, पनीर और मिठाइयों का उत्पादन होता है। इतना ही नहीं, खाद्य पदार्थों के नमूने लेकर महीनों तक रिपोर्ट की प्रतीक्षा करने के बजाय जांच और कार्रवाई की प्रक्रिया में तेजी लानी होगी।इसके साथ ही उपभोक्ताओं को भी जागरूक होने की जरूरत है। हमें मिठाइयां खरीदते समय विश्वसनीय दुकानों को प्राथमिकता देनी चाहिए, और पैकिंग पर निर्माण एवं उपयोग की अंतिम तिथि, सामग्री और खाद्य लाइसेंस संबंधी जानकारी अवश्य देखनी चाहिए। हमें यह चाहिए कि हम खुले में रखी गई मिठाइयों, अस्वच्छ परिस्थितियों में तैयार खाद्य पदार्थों और असामान्य रंग या गंध वाली सामग्री से बचें तथा केवल चमक-दमक और आकर्षक पैकिंग को ही शुद्धता का प्रमाण न मानें। हमारा यह दायित्व बनता है कि किसी खाद्य पदार्थ में मिलावट का संदेह होने पर हम खाद्य सुरक्षा विभाग में शिकायत दर्ज कराएं। जागरूक उपभोक्ता भी मिलावट के विरुद्ध एक प्रभावी शक्ति बन सकता है।

सरदार पटेलः जिसकी दृढ़ता के आगे झुक गई सैंकड़ों रियासतें



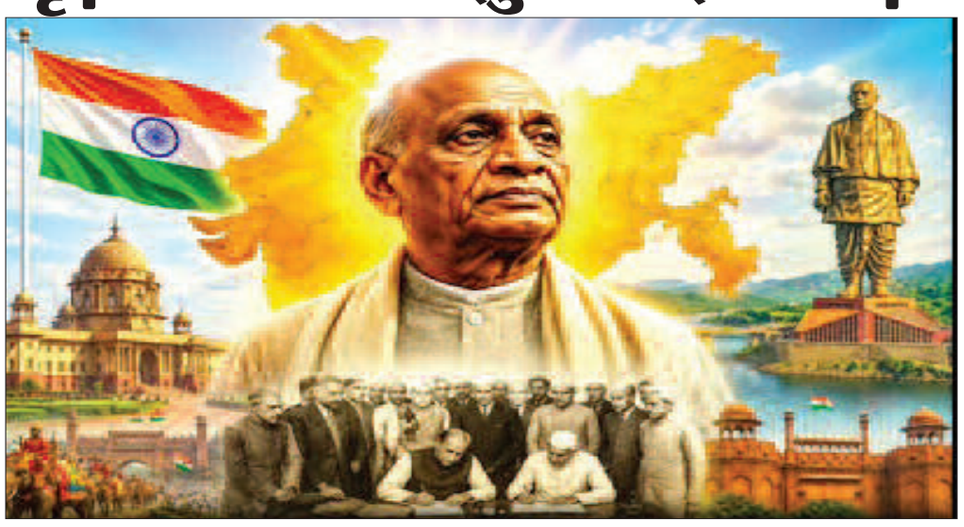
योगेश कुमार गोयल

सरदार पटेल ने अपने जीवन से यह साबित किया कि मजबूत इच्छाशक्ति, स्पष्ट सोच और देशहित में लिए गए साहसिक निर्णय असंभव दिखने वाले कार्यों को भी संभव बना सकते हैं। उन्होंने जिस एकजुट भारत का सपना देखा था, उसे सुरक्षित और मजबूत बनाए रखना हम सभी की जिम्मेदारी है। वास्तव में, सरदार पटेल केवल इतिहास के महान नेता नहीं बल्कि भारत की एकता, अखंडता और राष्ट्रीय स्वाभिमान के ऐसे अमर प्रतीक हैं, जिनकी प्रेरणा आने वाली पीढ़ियों को सदैव मिलती रहेगी।

भारत के राजनीतिक एकीकरण के महानायक सरदार पटेल...

भारत के स्वतंत्रता संग्राम और राष्ट्र निर्माण के इतिहास में सरदार वल्लभभाई पटेल का नाम सदैव सम्मान के साथ लिया जाता है। वे ऐसे महान नेता थे, जिन्होंने अपनी दृढ़ इच्छाशक्ति, साहस, दूरदर्शिता और निर्णय लेने की क्षमता से देश की दिशा बदल दी। वे केवल स्वतंत्रता सेनानी ही नहीं, स्वतंत्रता के बाद बिखरी हुई रियासतों को एकजुट कर मजबूत भारत की नींव रखने वाले महान शिल्पकार भी थे। इसी योगदान के सम्मान में उनकी जयंती 31 अक्तूबर को देशभर में 'राष्ट्रीय एकता दिवस' के रूप में मनाई जाती है। सरदार पटेल का जन्म 31 अक्तूबर 1875 को गुजरात के नाडियाद में एक साधारण किसान परिवार में हुआ था। बचपन से ही वे साहसी, स्वाभिमानी और मेहनती थे। आर्थिक स्थिति सामान्य होने के बावजूद उन्होंने अपनी मेहनत और लगन से शिक्षा प्राप्त की। कानून की पढ़ाई के लिए वे इंग्लैंड गए और वहां से बैरिस्टर बनकर लौटे। इसके बाद उन्होंने अहमदाबाद में वकालत शुरू की और शीघ्र ही एक सफल वकील के रूप में पहचान बना ली। लेकिन उनके मन में केवल व्यक्तिगत सफलता पाने की इच्छा नहीं थी। देश की गुलामी और आम लोगों की परेशानियां उन्हें भीतर तक प्रभावित करती थी।

महात्मा गांधी के विचारों और स्वतंत्रता आंदोलन से प्रभावित होकर उन्होंने अपनी सफल वकालत छोड़ दी और देशसेवा में जुट गए। वर्ष 1918 में गुजरात के खेड़ा जिले में किसानों की फसल खराब हो गई थी। इसके बावजूद अंग्रेज सरकार उनसे लगान वसूलना चाहती थी। पटेल ने किसानों को संगठित किया और लगान माफी के लिए आंदोलन का नेतृत्व किया। उनके नेतृत्व में किसानों ने एकजुट होकर सरकार का विरोध किया। अंततः अंग्रेज सरकार को किसानों की मांगों पर विचार करना पड़ा। इस आंदोलन ने पटेल को एक जननेता के रूप में स्थापित किया। वर्ष 1928 का बारडोली सत्याग्रह उनके जीवन का एक महत्वपूर्ण पड़ाव था। अंग्रेज सरकार ने किसानों पर लगान बढ़ा दिया था जबकि वे पहले से ही आर्थिक परेशानियों से जूझ रहे थे। पटेल ने गांव-गांव जाकर किसानों को संगठित किया और शांतिपूर्ण आंदोलन का नेतृत्व किया। महिलाओं ने भी इस आंदोलन में बढ़-चढ़कर भाग लिया। किसानों की एकजुटता और पटेल के दृढ़ नेतृत्व के सामने अंग्रेज सरकार को झुकना पड़ा। इस आंदोलन की सफलता के बाद वहां की महिलाओं ने उन्हें 'सरदार' की उपाधि दी। तभी से वे सरदार वल्लभभाई पटेल के नाम से



प्रसिद्ध हो गए।

सरदार पटेल का सबसे बड़ा योगदान स्वतंत्रता के बाद देश की रियासतों का भारत में विलय कराना था। 15 अगस्त 1947 को जब भारत स्वतंत्र हुआ, तब देश केवल अंग्रेजों से मुक्त नहीं हुआ था बल्कि उसके सामने एक और बड़ी चुनौती थी। देश में 562 से अधिक छोटी-बड़ी रियासतें थी, जिनमें से कुछ भारत में शामिल होना चाहती थी जबकि कुछ स्वतंत्र रहना या पाकिस्तान में जाना चाहती थी। यदि इन रियासतों का भारत में विलय नहीं होता तो देश की एकता और सुरक्षा के सामने गंभीर संकट खड़ा हो सकता था। उस समय सरदार पटेल देश के उपप्रधानमंत्री और गृहमंत्री थे। उन्होंने वी.पी. मेनन के सहयोग से रियासतों के शासकों से बातचीत शुरू की। उन्होंने उन्हें समझाया कि स्वतंत्र भारत में सभी राज्यों का भविष्य एक-दूसरे से जुड़ा है। उन्होंने संवाद, समझदारी, कूटनीति और आवश्यकता पड़ने पर कठोर निर्णयों के माध्यम से अधिकांश रियासतों को भारत में शामिल कराया। यह कार्य आसान नहीं था लेकिन पटेल ने असाधारण धैर्य और दृढ़ता का परिचय दिया।

जूनागढ़ और हैदराबाद का भारत में विलय उनकी राजनीतिक सूझबूझ और दृढ़ नेतृत्व के महत्वपूर्ण उदाहरण हैं। जूनागढ़ के नवाब ने पाकिस्तान में शामिल होने का निर्णय लिया था जबकि वहां की अधिकांश जनता भारत में शामिल होना चाहती थी। भारत सरकार ने स्थिति को संभालने के लिए कदम उठाए और अंततः जनमत संग्रह के माध्यम से जूनागढ़ का भारत में विलय हुआ। हैदराबाद के निजाम ने भारत में शामिल होने के बजाय स्वतंत्र रहने का प्रयास किया था। वहां रजाकारों की गतिविधियों से आम जनता में भय का माहौल था। बातचीत से समाधान नहीं निकलने पर सितंबर 1948 में भारत सरकार ने सैन्य कार्रवाई की, जिसे 'ऑपरेशन पोलो' कहा गया। पांच दिनों के भीतर हैदराबाद का भारत में विलय हो गया। इस प्रकार सरदार पटेल ने देश की एकता के सामने खड़ी बड़ी चुनौतियों का समाधान किया।

पटेल का योगदान केवल रियासतों के विलय तक सीमित नहीं था। उन्होंने स्वतंत्र भारत की प्रशासनिक व्यवस्था को मजबूत बनाने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। वे भारतीय प्रशासनिक सेवा और भारतीय पुलिस सेवा को देश की एकता, स्थिरता और सुचारु शासन के लिए आवश्यक मानते थे। उनका विश्वास था कि एक मजबूत प्रशासनिक व्यवस्था के बिना इतने विशाल और विविधतापूर्ण देश को एकजुट रखना कठिन होगा। उन्होंने इन सेवाओं को देश की प्रशासनिक रीढ़ बताते हुए इनके संरक्षण और विकास पर जोर दिया। विभाजन के समय देश में सांप्रदायिक हिंसा, विस्थापन और असुरक्षा का गंभीर संकट पैदा हो गया था। लाखों लोग अपना घर छोड़ने को मजबूर हुए। ऐसे कठिन समय में पटेल ने राहत और पुनर्वास के कार्यों को प्राथमिकता दी। वे प्रशासन को लगातार सक्रिय रखते थे और शरणार्थियों की समस्याओं के समाधान पर ध्यान देते थे। उनका मानना था कि स्वतंत्रता का वास्तविक अर्थ तभी पूरा होगा, जब देश के प्रत्येक नागरिक को सुरक्षा, सम्मान और आगे बढ़ने का अवसर मिलेगा।

जवाहरलाल नेहरू के साथ सरदार पटेल के कई मुद्दों पर मतभेद थे लेकिन उन्होंने हमेशा देशहित को व्यक्तिगत विचारों से ऊपर रखा। पटेल का मानना था कि देश को मजबूत बनाने के लिए नेतृत्व में सहयोग और आपसी विश्वास जरूरी है। उन्होंने अपने अनुभव और प्रशासनिक क्षमता से नवगठित सरकार को स्थिर बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। सरदार पटेल का जीवन सादगी, अनुशासन और कर्तव्यनिष्ठा का उदाहरण था। वे दिखावे से दूर रहते थे और काम को सबसे अधिक महत्व देते थे। उनके लिए देशसेवा किसी पद या प्रतिष्ठा का विषय नहीं बल्कि जीवन का उद्देश्य थी। वे कठिन परिस्थितियों में भी निर्णय लेने से पीछे नहीं हटते थे। उनकी यही विशेषता उन्हें अन्य नेताओं से अलग पहचान देती है।

15 दिसंबर 1950 को मुंबई में सरदार पटेल का निधन हो गया। वर्ष 1991 में उन्हें मरणोपरांत भारत के सर्वोच्च नागरिक सम्मान 'भारत रत्न' से सम्मानित किया गया। वर्ष 2018 में गुजरात के केवड़िया में उनकी 182 मीटर ऊंची प्रतिमा 'स्टैच्यू ऑफ यूनिटी' का लोकार्पण किया गया। यह विश्व की सबसे ऊंची प्रतिमा है और उनके महान योगदान की याद दिलाती है। आज भारत अनेक भाषाओं, धर्मों, संस्कृतियों और परंपराओं वाला देश है। हमारी यही विविधता हमारी सबसे बड़ी ताकत है। लेकिन इस ताकत को बनाए रखने के लिए आपसी सम्मान, भाईचारे और राष्ट्रीय एकता की भावना जरूरी है। सरदार पटेल ने अपने जीवन से यह साबित किया कि मजबूत इच्छाशक्ति, स्पष्ट सोच और देशहित में लिए गए साहसिक निर्णय असंभव दिखने वाले कार्यों को भी संभव बना सकते हैं। उन्होंने जिस एकजुट भारत का सपना देखा था, उसे सुरक्षित और मजबूत बनाए रखना हम सभी की जिम्मेदारी है। वास्तव में, सरदार पटेल केवल इतिहास के महान नेता नहीं बल्कि भारत की एकता, अखंडता और राष्ट्रीय स्वाभिमान के ऐसे अमर प्रतीक हैं, जिनकी प्रेरणा आने वाली पीढ़ियों को सदैव मिलती रहेगी।

दैनिक महाराष्ट्र समचार मलिक मुद्रक प्रकाशांन व संपादक अकबर खान प्लोट ने 302, वी पी वर्डे रोड ए ,आर औटो वोर्क्स बिहाइंड गेटी सिनेमा बांद्रा वैस्ट मुंबई -400050 महाराष्ट्र, मोबाइल नंबर 9152073782. प्राचीता प्रिंट प्राइवेट लिमिटेड- गला न:13 मकबा बिल्डिंग नियर एस ब्रिज एन एम जोशी मर्ग भैकल्ला वैस्ट मुंबई- 400027. किसी भी सुरत में न्याय क्षेत्र मुंबई होगा।

'लोकतंत्र बचाओ - अराजकता हटाओ' अभियान के तहत 2 नवंबर को शिवतीर्थ से कामगार मैदान तक निकलेगी पदयात्रा

क्या नसीरुद्दीन शाह फिल्म 'सरफरोश' के गुलफाम हसन का किरदार असल जिंदगी में निभा रहे हैं? - अमित साटम का अनोखा बयान

मुंबई/ अकबर खान



मुंबई : भारतीय जनता पार्टी, 'लोकतंत्र बचाओ - अराजकता हटाओ' अभियान के तहत गुरुवार को भाजपा मुंबई कार्यालय, वसंत स्मृति, दादर पूर्व में पत्रकार परिषद का आयोजन किया गया। इस दौरान भाजपा मुंबई अध्यक्ष एवं विधायक अमित साटम ने अभियान की भूमिका स्पष्ट करते हुए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में देश में हुए विकास कार्यों का उल्लेख किया और आगामी जनजागृति कार्यक्रमों की जानकारी दी।

साटम ने कहा कि पिछले 12 वर्षों में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भारत का सम्मान और वैश्विक स्तर पर प्रतिष्ठा बढ़ी है। भारत दुनिया की चौथी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन चुका है और देश में अनेक महत्वपूर्ण बुनियादी ढांचा परियोजनाओं का निर्माण हुआ है। उन्होंने कहा कि कोरोना महामारी के वैश्विक संकट के दौरान केंद्र सरकार द्वारा घोषित आत्मनिर्भर भारत पैकेज और देशव्यापी टीकाकरण अभियान ने भारत को इस संकट से उबरने में महत्वपूर्ण मदद की।

विपक्ष पर निशाना साधते हुए साटम ने आरोप लगाया कि कांग्रेस और राहुल गांधी जनता को गुमराह करने का प्रयास किया जा रहा है। विकास के मुद्दों पर चर्चा करने के बजाय विपक्ष अराजकता का माहौल बनाने की कोशिश कर रहा है। उन्होंने कहा कि डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर द्वारा देश को दिए गए संविधान का सम्मान करना और लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं पर विश्वास बनाए रखना आवश्यक है।

नसीरुद्दीन शाह से अमित साटम ने मांगा स्पष्टीकरण

पत्रकारों के सवालों का जवाब देते हुए अमित साटम ने अभिनेता नसीरुद्दीन शाह के कथित बयानों को लेकर अपनी प्रतिक्रिया दी।

साटम ने नसीरुद्दीन शाह से इस विषय पर अपनी भूमिका स्पष्ट करने और खुलकर जवाब देने की मांग की। उन्होंने इस संदर्भ में सवाल उठाया कि क्या नसीरुद्दीन शाह फिल्म 'सरफरोश' में गुलफाम हसन का किरदार केवल पर्दे पर निभा रहे थे या अब वास्तविक जीवन में भी उसी तरह की भूमिका निभा रहे हैं?

साटम ने आरोप लगाया कि भारत की बढ़ती वैश्विक प्रतिष्ठा कुछ अंतरराष्ट्रीय शक्तियों को रास नहीं आ रही है। उनके अनुसार, देश के भीतर विपक्ष और कुछ भारतविरोधी शक्तियां मिलकर अस्थिरता और अराजकता पैदा करने का प्रयास कर रही हैं। उन्होंने जावेद अख्तर, शबाना आजमी और नसीरुद्दीन शाह की भूमिकाओं पर भी सवाल उठाए। इस दौरान उन्होंने उद्धव ठाकरे और राज ठाकरे को लेकर भी टिप्पणी की।

उन्होंने नागरिकों से अपील की कि वे भ्रामक जानकारी के प्रभाव में न आएं और किसी भी विषय पर प्रतिक्रिया देने से पहले वास्तविक तथ्यों को समझें।

2 नवंबर को शिवतीर्थ से कामगार मैदान तक निकलेगी पदयात्रा

'लोकतंत्र बचाओ - अराजकता हटाओ' अभियान के तहत पदयात्रा निकाली जाएगी।

त्योहारी सीजन में यात्रियों को मिलेगी राहत, दोनों दिशाओं में 4 फेरे लगाएगी ट्रेन

बांद्रा टर्मिनस से गोरखपुर के लिए चलेगी साप्ताहिक स्पेशल ट्रेन, 11 और 18 नवंबर को होगी रवाना

मुंबई / अकबर खान



मुंबईः त्योहारी सीजन के दौरान यात्रियों की अतिरिक्त भीड़ को देखते हुए पश्चिम रेलवे ने बांद्रा टर्मिनस और गोरखपुर के बीच साप्ताहिक स्पेशल ट्रेन चलाने का निर्णय लिया है। इस ट्रेन के संचालन से मुंबई और उत्तर प्रदेश के बीच यात्रा करने वाले यात्रियों को राहत मिलेगी।

पश्चिम रेलवे द्वारा जारी प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार, ट्रेन संख्या 05092 बांद्रा टर्मिनस-गोरखपुर साप्ताहिक स्पेशल प्रत्येक बुधवार को दोपहर 1:45 बजे बांद्रा टर्मिनस से रवाना होगी और अगले दिन रात 11:55 बजे गोरखपुर पहुंचेगी। यह ट्रेन 11 और 18 नवंबर, 2026 को संचालित की जाएगी।

इसी प्रकार, वापसी में ट्रेन संख्या 05091 गोरखपुर-बांद्रा टर्मिनस साप्ताहिक स्पेशल प्रत्येक सोमवार को रात 9:55 बजे गोरखपुर से प्रस्थान करेगी और बुधवार दोपहर 12 बजे बांद्रा टर्मिनस पहुंचेगी। यह ट्रेन 9 और 16 नवंबर, 2026 को चलेगी। इस प्रकार दोनों दिशाओं में ट्रेन कुल चार फेरे लगाएगी।

इन स्टेशनों पर होगा ठहराव

यह स्पेशल ट्रेन दोनों दिशाओं में बोरीवली, वापी, सूरत, वडोदरा, रतलाम, भवानी मंडी, कोटा, गंगापुर सिटी, ईदगाह आगरा, टूंडला, कानपुर सेंट्रल, ऐशबाग, बादशाह नगर, गोंडा और बस्ती स्टेशनों पर रुकेगी।

31 अक्टूबर से शुरू होगी बुकिंग

ट्रेन संख्या 05092 के लिए टिकटों की बुकिंग 31 अक्टूबर, 2026 से सभी यात्री आरक्षण प्रणाली (पीआरएस) काउंटरों और आईआरसीटीसी की वेबसाइट पर शुरू होगी। यह ट्रेन विशेष किराये पर संचालित की जाएगी।

ट्रेन में एसी द्वितीय श्रेणी, एसी तृतीय श्रेणी, शयनयान और द्वितीय श्रेणी के सामान्य कोच उपलब्ध होंगे। यात्रियों को ट्रेन के ठहराव, समय और कोच संरचना से संबंधित विस्तृत जानकारी भारतीय रेलवे की वेबसाइट www.enquiry.indianrail.gov.in पर मिल सकेगी।

प्रदीप पूर्णेकर की हत्या के मुख्य साजिशकर्ताओं को संरक्षण दे रही महाराष्ट्र सरकार

- आदित्य ठाकरे ने लगाए आरोप, कहा- न्याय नहीं मिला तो निकालेंगे विशाल मोर्चा



मुंबई, एजेंसी। शिवसेना (यूबीटी) नेता आदित्य ठाकरे ने महाराष्ट्र सरकार पर पार्टी नेता प्रदीप पूर्णेकर की हत्या के मुख्य साजिशकर्ताओं को संरक्षण देने का आरोप लगाया है। शिवसेना (यूबीटी) के मानपाडा वार्ड प्रमुख प्रदीप पूर्णेकर की 29 सितंबर को हत्या कर दी गई थी। उन्हें पहले गोली मारी गई और फिर धारदार हथियारों से हमला किया गया। शिवसेना यूबीटी के सांसद संजय राउत के साथ एक संवाददाता सम्मेलन में वर्ली के विधायक आदित्य ठाकरने ने कहा कि प्रदीप पूर्णेकर की हत्या स्पष्ट रूप से राजनीतिक हत्या है। संदिग्धों के सीसीटीवी फुटेज उपलब्ध होने के बावजूद कार्रवाई क्यों नहीं की जा रही है? डिप्टी सीएम एकनाथ शिंदे आरोपियों और मुख्य साजिशकर्ताओं को क्यों बचा रहे हैं। उन्होंने चेतावनी दी कि यदि न्याय नहीं मिला, तो ठाणे में एक विशाल मोर्चा निकाला जाएगा। मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक आदित्य ठाकरे ने सवाल उठाया कि ऐतिहासिक रूप से बिहार को खराब शासन के उदाहरण के रूप में उद्धृत किया जाता था, लेकिन ठाणे में स्थिति इस हद तक बिगड़ गई है कि लोग यह कहने पर मजबूर हैं कि बिहार इससे बेहतर है। जब पूर्णेकर का बेटा राम प्रभारी मंत्री एकनाथ शिंदे से मिलना चाहता था, तो उसे हिरासत में ले लिया गया। जेड श्रेणी की सुरक्षा होने के बावजूद प्रभारी मंत्री इतने डरे हुए क्यों हैं?' वहीं, संजय राउत ने दावा किया कि महाराष्ट्र ने देवेंद्र फडणवीस जैसा कमजोर मुख्यमंत्री कभी नहीं देखा। उन्होंने कहा कि ठाणे की स्थिति बीड से भी बदतर है।

बांद्रा के गरीब नगर में 94 शेष अतिक्रमित ढांचों पर पश्चिम रेलवे की कार्रवाई, सभी पात्र परिवारों का पुनर्वास पूरा

बांद्रा टर्मिनस के पूर्वी हिस्से में बनेगा आधुनिक एकीकृत रेलवे परिसर, प्लेटफॉर्म संख्या 8 सहित कई महत्वपूर्ण परियोजनाओं को मिलेगी गति

मुंबई,/ अकबर खान



मुंबई : पश्चिम रेलवे ने बांद्रा (पूर्व) स्थित गरीब नगर में शेष बचे 94 ढांचों को हटाने की कार्रवाई आज शुरू कर दी है। इससे पहले मई 2026 में यहां बड़े पैमाने पर अतिक्रमण हटाने की कार्रवाई की गई थी। उस दौरान पात्र परियोजना प्रभावित परिवारों (PAPs) के पुनर्वास को ध्यान में रखते हुए 94 ढांचों को हटाने की कार्रवाई स्थगित रखी गई थी।

अब मुंबई महानगर क्षेत्र विकास प्राधिकरण (MMRDA) ने सभी 94 पात्र परियोजना प्रभावित परिवारों को वैकल्पिक स्थायी आवास आवंटित कर दिया है और उन्हें घरों का कब्जा भी सौंप दिया है। इसके बाद पश्चिम रेलवे ने शेष ढांचों को हटाने की प्रक्रिया शुरू की है।

यह कार्रवाई बॉम्बे हाईकोर्ट द्वारा रिट याचिका (लॉजिंग) क्रमांक 8840/2026 में 23 अक्टूबर 2026 को दिए गए आदेश के अनुपालन में की जा रही है। अदालत ने अपने आदेश में पात्र परियोजना प्रभावित व्यक्तियों को एक सप्ताह के भीतर परिसर खाली करने और उसके बाद रेलवे प्रशासन को 48 घंटे के भीतर ढांचों को हटाने का निर्देश दिया था।

बांद्रा में रेलवे इंफ्रास्ट्रक्चर का होगा व्यापक विकास

गरीब नगर की जमीन खाली होने से बांद्रा क्षेत्र में रेलवे की कई महत्वपूर्ण विकास परियोजनाओं का रास्ता साफ होगा। पश्चिम रेलवे की योजना के तहत बांद्रा टर्मिनस के पूर्वी हिस्से में आधुनिक एकीकृत रेलवे परिसर विकसित किया जाएगा। इससे यात्रियों को बेहतर सुविधाएं और आवागमन की अधिक सुगम व्यवस्था मिलेगी।

इसके अलावा प्लेटफॉर्म संख्या 8 का निर्माण, ट्रेनों को खड़ा करने की क्षमता में विस्तार और ट्रेन रखरखाव से जुड़ी सुविधाओं को मजबूत किया जाएगा। सहायक रखरखाव सुविधाओं के स्थानांतरण एवं विकास की योजना भी इसमें शामिल है।

परियोजना के तहत यात्रियों की आवाजाही को सुगम बनाने के लिए बेहतर सर्कुलेशन व्यवस्था, होल्डिंग एरिया और अन्य सहायक सुविधाओं का भी विकास किया जाएगा। इससे बांद्रा स्टेशन और टर्मिनस की यात्री प्रबंधन एवं रेल परिचालन क्षमता में वृद्धि होगी।

पश्चिम रेलवे की यह योजना बांद्रा क्षेत्र को एक आधुनिक और एकीकृत रेलवे परिसर के रूप में विकसित करने के व्यापक दृष्टिकोण का हिस्सा है। जमीन खाली होने से इन महत्वपूर्ण बुनियादी ढांचा परियोजनाओं को निर्धारित समय पर पूरा करने में मदद मिलेगी।

इन विकास कार्यों का सीधा लाभ मुंबई की उपनगरीय और लंबी दूरी की रेल सेवाओं से यात्रा करने वाले यात्रियों को मिलेगा। साथ ही रेलवे की परिचालन क्षमता, यात्री सुविधाओं और मुंबई की रेल कनेक्टिविटी को और अधिक मजबूत बनाने में मदद मिलेगी।

योगी आदित्यनाथ ही होंगे 2027 के विधानसभा चुनाव में भाजपा का चेहरा !

लखनऊ , एजेंसी। भारतीय जनता पार्टी में दिल्ली से लेकर लखनऊ तक चल रहे शह और मात के खेल के बीच संभवतः पार्टी को अब यह समझ आ गया है कि उत्तर प्रदेश में पार्टी की नैया योगी आदित्यनाथ के सहारे ही चुनावी वैतरणी पार कर सकेगी। इसीलिए तमाम विरोधाभासों के बीच पार्टी ने साफ कर दिया है कि 2027 में होने वाले उप्र विधानसभा चुनाव में योगी आदित्यनाथ का ही नेतृत्व रहेगा।

उप्र भाजपा के नए प्रभारी और राष्ट्रीय महासचिव विनोद तावड़े ने विधानसभा कार्य समिति के बाद चुनाव को लेकर अपना रूख साफ किया। उन्होंने कहा कि पार्टी 365 दिन लगातार अपनी जनता के लिए एक्टिव है। उन्होंने मुख्यमंत्री चेहरे को लेकर चल रही अटकलों पर पूरी तरह से विराम लगा दिया। अमित शाह के इशारों को पुख्ता करते हुए उन्होंने कहा कि बीजेपी 2027 का विधानसभा चुनाव मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व में ही लड़ा जाएगा। पार्टी उनके कामकाज और विकास मॉडल को चुनावी अभियान का प्रमुख आधार बनाएगी।

2027 के चुनाव के लिए बीजेपी ने संगठन और चुनावी प्रबंधन को मजबूत करने के उद्देश्य से 4-सी रणनीति पर काम शुरू किया है। इसमें ओआरडीनेशन (समन्वय), कैडर, कास्ट (जातिगत समीकरण) और कैडीडेचर (उम्मीदवार चयन) को प्रमुख आधार बनाया गया है। विनोद तावड़े ने संकेत दिया कि पार्टी का जोर बड़े-बड़े स्वागत समारोहों, होर्डिंग्स और दिखावे की राजनीति के बजाय जमीनी स्तर पर संगठन को मजबूत करने पर रहेगा। बूथ मैनेजमेंट, कार्यकर्ताओं के साथ समन्वय और कैडर की सक्रियता को चुनावी तैयारी का अहम हिस्सा बनाया जाएगा। उन्होंने कहा कि पार्टी लगातार बुथ लेवल से लेकर प्रदेश लेवल तक अपने कार्यकर्ताओं के साथ खड़ी हुई है और उनकी हर परेशानियों को दूर करेगी। समाजवादी पार्टी के पीडीए (पिछड़ा, दलित और अल्पसंख्यक) फॉर्मूले पर भी विनोद तावड़े ने निशाना साधा। उन्होंने पीडीए की अपनी व्याख्या करते हुए इसे 'पराया धन अपना' बताया। बीजेपी का दावा है कि वह विपक्ष के जातिगत समीकरणों का मुकाबला विकास और पारदर्शी गवर्नेंस के मुद्दे पर करेगी।



भाजपा मुंबई अध्यक्ष एवं विधायक अमित साटम ने ठाकरे बंधु और कांग्रेस को दी सलाह बीड जाकर दिखाएं 2 लाख पेड़ों का रोपण

पर्यावरण के नाम पर दोहरा रवैया बंद करें ठाकरे बंधु, पर्यावरण की बात करना उनके लिए महज फैशन बन गया

मुंबई / अकबर खान



मुंबईः मुंबई बीजेपी अध्यक्ष एवं विधायक अमित साटम ने ठाकरे बंधुओं और कांग्रेस को चुनौती दी है कि वे महाराष्ट्र के बीड जिले के उन 13 गांवों का दौरा करें, जहां मुंबई महानगरपालिका (बीएमसी) ने मिडिल वैतरणा बांध परियोजना के निर्माण के दौरान काटे गए पेड़ों की भरपाई के लिए 2 लाख पेड़ लगाने का दावा किया था। साटम ने कहा कि बीएमसी ने 540 हेक्टेयर क्षेत्र में इस वृक्षारोपण पर करोड़ों रुपये खर्च किए थे। उस समय बीएमसी में अविभाजित शिवसेना की सत्ता थी।

शुक्रवार को बीजेपी के प्रदेश कार्यालय में आयोजित प्रेस कॉन्फ्रेंस में साटम ने मनसे प्रमुख राज ठाकरे और शिवसेना (यूबीटी) विधायक आदित्य ठाकरे द्वारा कर्जत में प्रस्तावित पंप्ड स्टोरेज परियोजना के लिए पेड़ों की कटाई को लेकर लगाए गए आरोपों पर तीखी प्रतिक्रिया दी।

साटम ने कहा, 'सतत विकास बीजेपी की प्रतिबद्धता है, जबकि विपक्ष के लिए पर्यावरण की बात करना महज फैशन स्टेटमेंट बन गया है। ठाकरे बंधु पर्यावरण के नाम पर लोगों को गुमराह कर रहे हैं और समाज में अशांति फैलाने का प्रयास कर रहे हैं। उन्हें और उनके साथ खड़े कुछ कलाकारों को सतत विकास का महत्व समझने की जरूरत है। '

प्रस्तावित कर्जत पंप्ड स्टोरेज परियोजना का समर्थन करते हुए साटम ने इसे स्वच्छ ऊर्जा का उत्कृष्ट उदाहरण बताया। उन्होंने कहा कि 3,000 मेगावाट क्षमता वाली इस परियोजना का निर्माण 377 हेक्टेयर क्षेत्र में प्रस्तावित है। उनके मुताबिक, इतनी ही क्षमता वाला थर्मल पावर प्रोजेक्ट बनाने के लिए मुंबई के भौगोलिक क्षेत्रफल से 15 गुना अधिक जमीन की आवश्यकता होगी और 28 करोड़ पेड़ लगाने पड़ेंगे।

साटम ने आरोप लगाया कि भारत दुनिया की चौथी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन चुका है और देश की प्रगति से असहज कुछ विकसित देश भारत की विकास परियोजनाओं का विरोध कर रहे हैं। उन्होंने कांग्रेस, शरद पवार के नेतृत्व वाली एनसीपी, शिवसेना (यूबीटी) और कुछ कलाकारों पर भी विकास परियोजनाओं के विरोध में अभियान चलाने का आरोप लगाया।

प्रेस कॉन्फ्रेंस के दौरान साटम ने बीड जिले के 13 गांवों की तस्वीरें भी दिखाईं, जिन्हें बीएमसी ने दो लाख पेड़ों के वृक्षारोपण के लिए चुना था। उन्होंने ठाकरे बंधुओं से इन स्थानों का दौरा कर वास्तविक स्थिति देखने की अपील की।

उन्होंने यह भी दावा किया कि पिछले एक दशक में भारत और महाराष्ट्र में पेड़ों तथा मैंग्रोव सहित हरित क्षेत्र में वृद्धि हुई है। साटम के अनुसार, दुनिया में पंप्ड स्टोरेज पावर की स्थापित क्षमता 201 गीगावाट तक पहुंच गई है, जिसमें चीन और जापान ने उल्लेखनीय प्रगति की है, जबकि भारत की क्षमता 7.43 गीगावाट है।

राज ठाकरे पर निशाना साधते हुए साटम ने कहा कि वे गुजरात के नाम पर गलत नैरेटिव फैला रहे हैं। उन्होंने रमेश किनी हत्याकांड के आरोपी रहे सुमन शाह और लक्ष्मणचंद शाह के गुजरात से होने का भी उल्लेख किया।

साटम ने अंत में उद्धव ठाकरे और राज ठाकरे पर महाराष्ट्र के विकास का विरोध करने तथा राज्य के हितों के खिलाफ काम करने का आरोप लगाया। उन्होंने इसे राज्य की प्रगति में बाधा डालने वाला रवैया बताया।

नोटः इस खबर में परियोजना, वृक्षारोपण और राजनीतिक आरोपों से जुड़े आंकड़े एवं दावे अमित साटम के प्रेस कॉन्फ्रेंस में दिए गए बयानों पर आधारित हैं।

भ्रष्टाचार को हम सब मिलकर हटाएंगे -डॉ. बी.के. महाराणा

दिल्ली / संवाददाता



न्यू दिल्लीः महाराष्ट्र की धरती छत्रपति शिवाजी महाराज की धरती को हर कोई जानता है। इस पवित्र स्थान पर भारतीय भ्रष्टाचार निवारण संस्था (ए.सी.आई.सी.) ने ठाणे, महाराष्ट्र में एक विशेष बैठक आयोजित की। विशेष बैठक का आयोजन राष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष आशुतोष त्रिपाठी की अध्यक्षता में किया गया. भारतीय भ्रष्टाचार निवारण संस्था (ए.सी.आई.सी.) के राष्ट्रीय सचिव शंकर वी. ठक्कर इस बैठक में उपस्थित थे और उन्होंने 27वें वार्षिक दिवस समारोह को सफल बनाने में सहयोग और सहायता के लिए ए.सी.आई.सी. के सभी गणमान्य व्यक्तियों को धन्यवाद दिया।इस विशेष अवसर पर ए.सी.आई.सी. ने मंजू गुप्ता (राष्ट्रीय महिला विंग, उपाध्यक्ष, ए.सी.आई.सी.), प्रख्यात सामाजिक कार्यकर्ता डॉ. जयेश परमार, डॉ. नूर बानो गौस, प्रख्यात गायक सुनील तिवारी और निशा पदावे (राष्ट्रीय सी.एस.आर. प्रमुख) का जन्मदिन भव्य तरीके से मनाया और सभी ने पार्टी का आनंद लिया।भारतीय भ्रष्टाचार निवारण संस्था (ए.सी.आई.सी.) की इस विशेष बैठक के दौरान, ए.सी.आई.सी. के नव नियुक्त उपाध्यक्ष और अंतर्राष्ट्रीय युवा पुरस्कार विजेता डॉ. बिजयकुमार महाराणा ने कहा, 'मैं ए.सी.आई.सी. में शामिल होकर वास्तव में बहुत उत्साहित हूं, यह एक टीम वर्क है, हम सब मिलकर भ्रष्टाचार को हटाएंगे। 'श्रेया तटकरे (ए.सी.आई.सी. अध्यक्ष, महाराष्ट्र राज्य, महिला विंग), निशा जगताप, अजय राणे, प्रख्यात गायिका आराधना दुबे, शशांका देसाई, प्रख्यात सामाजिक कार्यकर्ता डॉ. शिवानी गुंजल, डॉ. नेहा कोल्हे, परोपकारी सामाजिक कार्यकर्ता अंकोर गिरीश शर्मा जी, भरत शिंदे, सुरेखा गायकवाड़, ए.सी.आई.सी. जनसंपर्क अधिकारी रमेश पहल और स्वाति पाटिल आज ए.सी.आई.सी. की विशेष बैठक में उपस्थित थे और सभी ने समाज से भ्रष्टाचार को दूर करके अपनी मातृभूमि को मजबूत और महान बनाने के लिए मिलकर काम करने और सफलता प्राप्त करने का संकल्प लिया।डॉ. बिपिन मिश्रा ने कहा, 'यह जानकर मुझे अत्यंत प्रसन्नता हुई कि भारतीय भ्रष्टाचार निवारण संस्था (ए.सी.आई.सी.) समाज और राष्ट्र के कल्याण के लिए उत्कृष्ट कार्य कर रही है। मेरी शुभकामनाएं सभी के साथ हैं और डॉ. मिश्रा ने सभी से एकजुट भावना बनाए रखने और सफलता प्राप्त करने का आग्रह किया। 'भारतीय भ्रष्टाचार निवारण संस्था (ए.सी.आई.सी.) के संस्थापक और अध्यक्ष अशोक त्रिपाठी ने ए.सी.आई.सी. के 27वें वार्षिक दिवस समारोह के सफल आयोजन के लिए सभी को धन्यवाद दिया।



टमाटर की खेती

भारत में मटर 7.9 लाख हेक्टेयर भूमि में उगाई जाती है। इसका वार्षिक उत्पादन 8.3 लाख टन एवं उत्पादकता 1029 किग्रा./हेक्टेयर है। मटर उगाने वाले प्रदेशों में उत्तर प्रदेश प्रमुख हैं। उत्तरप्रदेश में 4.34 लाख हेक्टेयर क्षेत्र में मटर उगाई जाती है, जो कुल राष्ट्रीय क्षेत्र का 53.7% है। इसके अतिरिक्त मध्य प्रदेश में 2.7 लाख हे., उड़ीसा में 0.48 लाख., बिहार में 0.28 लाख हे. क्षेत्र में मटर उगाई जाती है।



उत्पादन तकनीक

भूमि की तैयारी – मटर की खेती विभिन्न प्रकार की मृदाओं में की जा सकती है, फिर भी गंगा के मैदानी भागों की गहरी दोमट मिट्टी इसके लिए सबसे अच्छी रहती है। मटर के लिए भूमि को अच्छी तरह तैयार करना चाहिए। खरीफ की फसल की कटाई के बाद भूमि की जुताई मिट्टी पलटने वाले हल करके 2–3 बार हैरो चलाकर अथवा जुताई करके पाटा लगाकर भूमि तैयार करनी चाहिए। धान के खेतों में मिट्टी के ढेलों को तोड़ने का प्रयास करना चाहिए। अच्छे अंकुरण के लिए मिट्टी में नमी होना जरुरी है।

फसल पद्धति– सामान्यत: मटर की फसल, खरीफ ज्वार, बाजरा, मक्का, धान और कपास के बाद उगाई जाती है। मटर, गेंहूँ और जौ के साथ अंत: पसल के रूप में भी बोई जाती है। हरे चारे के रूप में जई और सरसों के साथ इसे बोया जाता है। बिहार एवं पश्चिम बंगाल में इसकी उतेरा विधि से बुआई की जाती है।

बीजोपचार – उचित राजोबियम संवर्धक (कल्चर) से बीजों को उपचारित करना उत्पादन बढ़ाने का सवसे सरल साधन है। दलहनी फसलों में वातावरणीय नाइट्रोजन के स्थिरीकरण करने की क्षमता जड़ों में स्थित ग्रंथिकाओं की संख्या पर निर्भर करती है और यह भी राइजोबियम की संख्या पर भी निर्भर करता है। इसलिए इन जीवाणुओं का मिट्टी में होना जरुरी है। क्योंकि मिट्टी में जीवाणुओं की संख्या पर्याप्त नहीं होती है, इसलिए राईजोबियम संवर्धक से बीजों को उपचारित करना जरूरी है।



राईजोबियम से बीजों को उपचारित करने के लिए उपयुक्त कल्चर का एक पैकेट (250 ग्राम) 10 किग्रा. बीज के लिए पर्याप्त होता ही। बीजों को उपचारित करने के लिए 50 ग्राम गुड़ और 2 ग्राम गोंद को एक लीटर पानी में घोल कर गर्म करके मिश्रण तैयार करना चाहिए। सामान्य तापमान पर उसे ठंडा होने दें और ठंडा होने के बाद उसमें एक पैकेट कल्चर डालें और अच्छी तरह मिला लें। इस मिश्रण में बीजों को डालकर अच्छी तरह से मिलाएं, जिससे बीज के चारों तरफ इसकी लेप लग जाए। बीजों को छाया में सुखाएं और फिर बोयें। क्योंकि राइजोबियम फसल विशेष के लिए ही होता है, इसलिए मटर के लिए संस्तुत राईजोबियम का ही प्रयोग करना चाहिए। कवकनाशी जैसे केप्टान, थीरम आदि भी राईजोबियम कल्चर के अनुकूल होते हैं। राइजोबियम से उपचारित करने के 4–5 दिन पहले कवकनाशियों से बीजों का शोधन कर लेना चाहिए।

बुआई के समय– मटर की बुआई मध्य अक्तूबर से नवम्बर तक की जाती है जो खरीफ की फसल की कटाई पर निर्भर करती है। फिर भी बुआई का उपयुक्त समय अक्तूबर के आखिरी सप्ताह से नवम्बर का प्रथम सप्ताह है।

बीज–दर, दूरी और बुआई– बीजों के आकार और बुआई के समय के अनुसार बीज दर अलग–अलग हो सकती है। समय पर बुआई के लिए 70–80 किग्रा. बीज/हे. पर्याप्त होता है। पछेती बुआई में 90 किग्रा./हे.बीज होना चाहिए। देशी हल जिसमें पोरा लगा हो या सीड ड्रिल से 30 सेंमी. की दूरी पर बुआई करनी चाहिए। बीज की गहराई 5–7 सेंमी. रखनी चाहिये जो मिट्टी की नमी पर निर्भर करती है। बौनी मटर के लिए बीज दर 100 किलोग्राम/हे.उपयुक्त है।

उर्वरक – मटर में सामान्यत: 20 किग्रा, नाइट्रोजन एवं 60 किग्रा. फास्फोरस बुआई के समय देना पर्याप्त होता है। इसके लिए 100–125 किग्रा. डाईअमोनियम फास्फेट (डी, ए,पी) प्रति हेक्टेयर दिया जा सकता है। पोटेशियम की कमी वाले क्षेत्रों में 20 कि.ग्रा. पोटाश (म्यूरेट ऑफ़ पोटाश के माध्यम से) दिया जा सकता है। जिन क्षेत्रों में गंधक की कमी हो वहाँ बुआई के समय गंधक भी देना चाहिए। यह उचित होगा कि उर्वरक देने से पहले मिट्टी की जांच करा लें और कमी होने पर उपयुक्त पोषक तत्वों को खेत में दें।

सिंचाई– प्रारंभ में मिट्टी में नमी और शीत ऋतु की वर्षा के आधार पर 1–2 सिंचाइयों की आवश्यकता होती है। पहली सिंचाई फूल आने के समय और दूसरी सिंचाई फलियाँ बनने के समय करनी चाहिए। इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि हल्की सिंचाई करें और फसल में पानी ठहरा न रहे।

खतपतवार नियंत्रण – खरपतवार फसल के निमित्त पोषक तत्वों व जल को ग्रहण का फसल को कमजोर करते हैं और उपज के भारी हानि पहुंचाते हैं। फसल को बढ़वार की शुरू की अवस्था में खरपतवारों से अधिक हानि होती है। अगर इस दौरान खरपतवार खेत से नहीं निकाले गये तो फसल की उत्पादकता बुरी तरह से प्रभावित होती है। यदि खेत में चौड़ी पत्ती वाले खरपतवार, जैसे–बथुआ, सेंजी, कृष्णनील, सतपती अधिक हों तो 4–5 लीटर स्टाम्प–30 (पैंडीमिथेलिन) 600–800 लीटर पानी में प्रति हेक्टेयर की दर से घोलकर बुआई के तुरंत बाद छिड़काव कर देना चाहिए। इससे काफी हद तक खरपतवारों को नियंत्रित किया जा सकता है।

रोग एवं कीट प्रबन्धन

रोग

रतुआ – इस रोग के कारण जमीन के ऊपर के पौधे के सभी अंगों पर हल्के से चमकदार पीले (हल्दी के रंग के) फफोले नजर आते हैं। पत्तियों की निचली सतह पर ये ज्यादा होते हैं। कई रोगी पत्तियाँ मुरझा कर गिर जाती है। अंत में पौधा सुखकर मर जाता है। रोग के प्रकोप से सें संकुचित व छोटे हो जाते हैं। अगेती फसल बोने से रोग का असर कम होता है। अवरोधी प्रजाति मालवीय मटर 15 प्रयोग करें।

आर्द्रजड़ गलन– इस रोग से प्रकोपित पौधों की निचली पत्तियाँ हल्के पीले रंग की हो जाती है। पत्तियाँ नीचे की ओर मुड़कर सुखी और पीली पड़ जाती है। तनों और जड़ों पर खुरदरे खुरंट से पड़ जाते हैं। यह रोग जड़–तंत्र सड़ा डालता है। यह रोग मृदा जनित है। रोग की बीजाणु वर्षों तक मिट्टी में जमे रहते हैं। हवा में 25 से 50% की अपेक्षित आर्द्रता और 22 से 32 डिग्री में सेल्सियस दिन का तापमान रोग पनपने में सहायक होता है। रोगग्राही फसल को उसी खेत में हर साल न उगाएँ। बीज का उपचार करने के लिए कार्बेन्ड़ाजिम 1 ग्राम + थीरम 2 ग्राम मात्रा एक किग्रा. बीज में मिलाएं। फसल की अगेती बुआई से बचें तथा सिंचाई हल्की करें।

चांदनी रोग– इस रोग से पौधों पर एक से.मी. व्यास के बड़े–बड़े गोल बादामी और गड्ढे वाले दाग पीजे जाते हैं। इन दागों के चारों ओर गहरे रंग की किनारों भी होती है। तने पर घेरा बनाकर यह रोग पौधे के मार देता है। रोग मुक्त बीज ही बोयें 3 ग्राम थीरम दवा प्रति किग्रा. बीज की दर से मिलाकर बीजोपचार करें।

तुलासिता/रोमिल फफूंद– इस रोग के कारण पत्तियों की ऊपरी सतह एप पीले और ठीक उनके नीचे की सतह पर रुई जैसी फफूंद छा जाती है और रोगग्रस्त पौधों की बढ़वार रुक जाती है। पत्तियाँ समय से पहले ही झड़ जाती है। संक्रमण अधिक होने पर 0.2% मौन्कोजेब अथवा जिनेब का छिड़काव 400–800 लीटर पानी में प्रति हेक्टेयर की दर से करनी चाहिए।

पौध/मूल विगलन– जमीन के पास के हिस्से से नये फूटे क्षेत्रों पर इस रोग का प्रकोप होता है। तना बादामी रंग का होकर सिकुड़ जाता है, जिसकी वजह से पौधे मर जाते हैं। 3 ग्रा. थीरम+1 ग्राम कार्बेन्डाजिम प्रति किग्रा. बीज की दर से बीजोपचार करें खेत का जल निकास ठीक रखें। संक्रमित खेती में अगेती बुआई न करें।

कीट



तना मक्खी – ये पूरे देश में पाई जाती है। पत्तियों, डंठलों अरु कोमल तनों में गांठें बनाकर मक्खी उनमें अंडे देती है। अंडों देती है। अंडों से निकली सड़ी पत्ती के डंठल या कोमल तनों मने सुरंग बनाकर अंदर–अंदर खाती है, जिससे नये पौधे कमजोर होकर झुक जाते हैं और पत्तियों पीली पड़ जाती है। पौधों की बढ़वार रुक जाती है। अंतत: पौधे मर जाते हैं।

मांहू (एफिड) – कभी–कभी मांहू भी मटर की फसल को काफी नुकसान पहुंचाते हैं। इनके बच्चे और वयस्क दोनों ही पौधे का रस चूसने में सक्षम होते हैं। यह रस ही नहीं चूसते, बल्कि जहरीले तत्व भी छोड़ देते हैं। इसका भारी प्रकोप होने पर फलियाँ मुरझा जाती हैं। अधिक प्रकोप होने पर फलियाँ सुख जाती है। मांहू मटर एक वायरस (विषाणु) को फैलाने में भी उसके वाहक बनकर सहायता करती है।

मटर का अधफंदा (सेमीलूपर) – यह मटर का साधारण कीट है। इसकी गिड़ारें पत्तियाँ खाती है। पर कभी–कभी फूल और कोमल फलियों को भी खा जाती हैं। चलते समय यह शरीर के बीचोबीच फंदा सा बनाती है, इसलिए इसका नाम अधफंदा या सेमिलुपर पड़ा। जहाँ पर तना मक्खी या पटसुरंगा या मांहू का प्रकोप हो, वहाँ 2% फोरेट से बीज उपचार करें या 1 किग्रा.फोरेट प्रति हेक्टेयर की दर से खेत की मिट्टी में बुआई के समय मिला दें। आवश्यकता होने पर पहली निकलने की अवस्था में फसल पर 0.03% डामेथोएट 400 से 500 लीटर पानी में मिलाकर घोल कर प्रति हेक्टेयर छिड़कें। जहाँ बुआई के समय मिट्टी में दवा न मिला पाए हों, वहाँ कीट के प्रकोप के अनुसार कीटनाशी दवा का छिड़काव करें। कटीला फली भेदक (एटीपेला) – यह फली भेदक उत्तर भारत में अधिक पाया जाता है। अगेती किस्म के अपेक्षा पछेती प्रजातियों पर इसका अधिक प्रकोप होता है। इसी तरह देर से बोई गयी फसल में जल्दी बोई गयी फसल की तुलना में अधिक हानि होती है। फली और अंखुबड़ी के जोड़ वाली जगह पर या फली की सतह पर यह पंतगा अंडे देता है। अंडे से निकलते ही इसके नियंत्रण के लिए आवश्यक कदम उठाना चाहिए। कटाई और मड़ाई – मटर की फसल सामन्यत: 130–150 दिनों में पकती है। इसकी कटाई दरांती से करनी चाहिए 5–7 दिन धुप में सुखाने के बाद बैलों से मड़ाई करनी चाहिए। साफ दानों को 3–4 दिन धूप में सुखाकर उनको भंडारण पात्रों (बिन) में करना चाहिये। भंडारण के दौरान कीटों से सुरक्षा के लिए एल्युमिनियम फोस्फाइड का उपयोग करें।

सर्दियों के टमाटर के लिए अभी से करें बिजाई

टमाटर विश्व में सबसे ज्यादा प्रयोग होने वाली सब्जी है। भारतीय पाक–पकवानों में टमाटर का विशेष महत्व है। इसे सब्जी बनाने से लेकर, सलाद में, सूप के तौर पर, चटनी के रूप में और यहां तक की ब्यूटी प्रोडक्ट के रूप में भी इसे इस्तेमाल किया जाता है। टमाटर में विटामिन सी, लाइकोपीन, विटामिन, पोटैशियम पर्याप्त मात्रा में पाया जाता है. साथ ही इसमें कोलेस्ट्रॉल को कम करने वाले तत्व भी पर्याप्त मात्रा में होते हैं। टमाटर की सबसे बड़ी खासियत यह है कि टमाटर को पका देने के बाद भी उसके पोषक तत्व बने रहते हैं। टमाटर की अधिक पैदावार के लिए किसान निम्नलिखित उन्नत तकनीकें अपनाएं।

उन्नत किस्में: हिसार अरुण, हिसार ललित, हिसार लालिमा

बिजाई : टमाटर की मुख्य उपयुक्त किस्में सर्दी के लिए जून से मध्य जुलाई तक बोई जा सकती हैं और वसंत के लिए नवंबर से दिसम्बर तक बोई जा सकती हैं।

बीज की मात्र व बिजाई का तरीका : यदि फसल जून में बो रहे है तो 400–500 ग्राम बीज प्रति एकड़ के हिसाब से बोये। नवंबर में 200 ग्राम बीज प्रति एकड़ बोयें।

बीज उपचार : बीज जनित रोगों से बचाने के लिए थायिरम या कैप्टान 2.5 ग्राम/किलोग्राम बीज के दर से उपचार करना लाभदायक है।

नर्सरी स्थापना : सर्दी में तैयार होने वाले टमाटर के लिए 3म1 मीटर के 40 बेड प्रति एकड़ और वसंत में होने वाले टमाटर के लिए 15 बेड प्रति एकड़ तैयार करें। गर्मी में लगने वाली पोध 4 हफ्ते और सर्दी में लगने वाली 8–10 हफ्ते में तैयार हो जाती है।

रोपाई : रोपाई का सही समय तब होता है जब पौध में 5–6 पत्तियां निकल आये।

खाद एवं उर्वरक : टमाटर की अच्छी फसल प्राप्त करने के लिए खाद एवं उर्वरक का सही मात्रा में प्रयोग अनिवार्य है। बीज की तैयारी करते समय खेत में अंतिम जुताई के बाद 20–25 टन खाद प्रति एकड़ के हिसाब से मिलायें। टमाटर की अच्छी पैदावार के लिए अंतिम जुताई के समय उसमे 20 किलो पोटाश और 25 किलो फोस्फोरस मिलाए और 40 किलो नाइट्रोजन का तीसरा भाग प्रति एकड़ के हिसाब से मिलायें। बचा हुआ नाइट्रोजन बराबर मात्र में एक चार हफ्ते बाद और एक उसके एक महीने बाद मिलायें।

सिंचाई : पहली सिंचाई रोपाई के बाद दें और उसके बाद हर 8–10 के भीतर सिंचाई करें जब तक टमाटर की फसल तैयार न हो जाये।

निराई गुडाई : टमाटर में खरपतवार का नियंत्रण करना अनिवार्य है यदि आप अच्छी पैदावार चाहते हैं तो नियंत्रण के लिए एक बार 20 से 25 दिन में निराई गुडाई करे और दूसरी 40 से 45 दिन में आवश्यक है।

कटाई का समय : जब टमाटर पर लाल पीली धारियां सी पड़ने लगे तो समझ लीजिये क आपकी फसल तैयार है। यदि टमाटर कही दूर बाज़ार में बेचने हो तो जब वो थोड़े हरे हो तभी उन्हें तोड़ लें।

फल फटने की समस्या और कारण

ठंड के मौसम में टमाटर के फल फटने की समस्या अक्सर होती है, जो उत्पादन में कमी का कारण बनती है। जिला उद्यान अधिकारी डॉ. पुनीत कुमार पाठक के अनुसार, यह समस्या सूखा पड़ने या बोरान की कमी के कारण होती है। इसके अलावा, ऊसर भूमि पर टमाटर की खेती करने से भी यह समस्या बढ़ सकती है।



सर्दी और बारिश से टमाटर की फसल पर असर

खराब मौसम, खासकर सूखा पड़ने के बाद अचानक बारिश होने से टमाटर में फल फटने की समस्या उत्पन्न होती है। इसके लिए किसानों को सूखा पड़ने पर भी नियमित सिंचाई करनी चाहिए, ताकि बारिश के बाद फल फटने की समस्या कम हो सके।

बोरान की कमी और समाधान

टमाटर में फल फटने की समस्या बोरान की कमी के कारण होती है। इसे रोकने के लिए किसान मिट्टी में 20–25 किलोग्राम बोरान मिला सकते हैं और 0.25% बोरेक्स का घोल टमाटर के पौधों पर छिड़क सकते हैं। इसे 2–3 बार छिड़कने से फल फटने की समस्या रोकी जा सकती है।

ऊसर भूमि पर टमाटर की खेती से बचें

ऊसर भूमि पर टमाटर की खेती से फल फटने की समस्या ज्यादा होती है। इसलिए, किसानों को ऊसर भूमि पर टमाटर की खेती से बचना चाहिए, ताकि वे इस समस्या से बच सकें और बेहतर उत्पादन पा सकें।

हिंदुजा हाउसिंग फाइनेंस ने विवेक कन्नन को नियुक्त किया सीईओ

नई दिल्ली ।

हिंदुजा हाउसिंग फाइनेंस ने विवेक कन्नन को अपना मुख्य कार्यपालक अधिकारी (सीईओ) नियुक्त करने की शुक्रवार को घोषणा की। कन्नन 2020 में कंपनी में मुख्य परिचालन अधिकारी (सीओओ) के रूप में शामिल हुए थे। वह सचिन पिल्लई की जगह लेंगे, जिन्होंने 29 अक्टूबर को आवास वित्त कंपनी के प्रबंध निदेशक पद से इस्तीफा दे दिया था। पिल्लई कंपनी के निदेशक मंडल में गैर-कार्यकारी निदेशक के रूप में बने रहेंगे। वित्तीय सेवा क्षेत्र में दो दशक से अधिक का अनुभव रखने वाले कन्नन कंपनी की बाजार में मौजूदगी मजबूत करने और सतत वृद्धि को आगे बढ़ाने पर ध्यान देंगे।नियुक्ति पर टिप्पणी करते हुए हिंदुजा हाउसिंग फाइनेंस ने कहा कि उनके नेतृत्व में कंपनी अपनी क्षमताओं को लगातार मजबूत करेगी और ग्राहकों तथा हितधारकों को दीर्घकालिक मूल्य उपलब्ध कराएगी।हिंदुजा हाउसिंग फाइनेंस, हिंदुजा लेलैंड फाइनेंस लिमिटेड की अनुषंगी कंपनी है।

गोदरेज कंज्यूमर का मुनाफा बढ़कर 523 करोड़ पहुंचा

नई दिल्ली ।

गोदरेज कंज्यूमर प्रोडक्ट्स लिमिटेड (जीसीपीएल) का मुनाफा चालू वित्त वर्ष 2026-27 की दूसरी तिमाही में सालाना अधार पर 13.84 प्रतिशत बढ़कर 522.92 करोड़ रुपये रहा। कंपनी का मुनाफा पिछले वित्त वर्ष की समान तिमाही में 459.34 करोड़ रुपये था। गोदरेज कंज्यूमर प्रोडक्ट्स ने शेयर बाजार को दी सूचना में गुरुवार को बताया कि समीक्षाधीन तिमाही में कुल परिचालन आय 19 प्रतिशत बढ़कर 4,413.09 करोड़ रुपये हो गई, जो पिछले वित्त वर्ष की समान तिमाही में 3,708.19 करोड़ रुपये थी। कंपनी के अनुसार वित्त वर्ष 2026-27 की दूसरी (जुलाई-सितंबर) तिमाही में उसकी एकीकृत बिक्री सालाना आधार पर 19 प्रतिशत बढ़ी। रोजमर्रा के उपभोक्ता सामान बेचने वाली (एफएमसीजी) क्षेत्र की इस प्रमुख कंपनी के कर पूर्व आय (ईबीआईटीडीए) में सालाना आधार पर 12 प्रतिशत की वृद्धि हुई। वहीं दूसरी तिमाही में कंपनी का कुल खर्च 20.6 प्रतिशत बढ़कर 3,758.26 करोड़ रुपये रहा।

एआई के प्रभाव से अल्फाबेट की मार्केट वैल्यू में 500 अरब डॉलर की गिरावट

कमजोर विज्ञापन कारोबार और एआई से राजस्व घटने की आशंका से निवेशक चिंतित



नई दिल्ली ।

गूगल की मूल कंपनी अल्फाबेट के शेयरों में 13 फीसदी से अधिक की तेज गिरावट दर्ज हुई, जिससे उसके बाजार पूंजीकरण में 500 अरब डॉलर से अधिक की कमी आई। यह अल्फाबेट के इतिहास में बाजार पूंजीकरण की सबसे बड़ी गिरावट है। तीसरी तिमाही के कमजोर नतीजों और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) द्वारा मुख्य राजस्व पर पड़ने वाले संभावित नकारात्मक प्रभाव की आशंका ने निवेशकों की चिंता बढ़ाई। अल्फाबेट ने तीसरी तिमाही में 111.2 अरब डॉलर की बिक्री दर्ज की, जो विश्लेषकों के अनुमान से कम थी। सर्च और विज्ञापन आय भी बाजार की उम्मीदों पर खरी नहीं उतरी। यह आय कुल कमाई का लगभग आधा है और एआई में बड़े निवेश के लिए अहम है। विज्ञापन कारोबार की वृद्धि दर पिछले पांच तिमाहियों में सबसे धीमी रही। कंपनी के एक अधिकारी ने बताया कि गूगल सर्च में एआई मोड की बढ़ती लोकप्रियता से कमाई प्रभावित हुई है, क्योंकि एआई प्रश्नों से अपेक्षाकृत कम राजस्व मिलता है। कंपनी इसमें विज्ञापनों की संख्या बढ़ाने की योजना बना रही है। निवेशक चिंतित हैं कि चैटजीपीटी जैसे एआई चैटबॉट और गूगल के अपने एआई फीचर्स उपभोक्ताओं को उसके सबसे अधिक कमाई वाले सर्च कारोबार से दूर कर सकते हैं। अल्फाबेट को एआई महत्वाकांक्षाओं पर भविष्य में 1 लाख करोड़ डॉलर से अधिक खर्च होने का अनुमान है, जिससे शीर्ष अधिकारियों पर इस भारी-भरकम निवेश को सही ठहराने का दबाव बढ़ गया है।

शेयर बाजार तेजी के साथ बंद

सेंसेक्स 308, निफ्टी 116 अंक उछला

मुंबई ।

भारतीय शेयर बाजार शुक्रवार को बढ़त के साथ बंद हुआ। सप्ताह के अंतिम कारोबारी दिन बाजार में ये बढ़त दुनिया भर के बाजारों से मिले अच्छे संकेतों के साथ ही खरीददारी हावी रहने से आयी है। दिन के अंत में 30 शेयरों वाला बीएसई सेंसेक्स 308.49 अंक बढ़कर 74,459.53 और 50 शेयरों वाला एनएसई निफ्टी 116.35 अंक उछलकर 23,053.10 पर बंद हुआ।

आज लार्जकैप के विपरीत मिडकैप और स्मॉलकैप में दबाव रहा। निफ्टी मिडकैप 100 इंडेक्स 540.40 अंक की गिरावट के साथ 57,301.25 और निफ्टी स्मॉलकैप 100 इंडेक्स 347.75 अंक की कमजोरी के साथ 18,463.60 पर बंद हुआ।

बाजार को सहारा आईटी शेयरों से मिला, सूचकांकों में निफ्टी आईटी और निफ्टी हेल्थकेयर की बढ़त के साथ बंद हुए। निफ्टी फार्मा , निफ्टी सर्विसेज , निफ्टी कंजप्शन और निफ्टी इन्फ्रा में भी तेजी रही।

वहीं, निफ्टी इंडिया डिफेंस, निफ्टी कंज्यूमर ड्यूरेबल्स, निफ्टी मीडिया , निफ्टी एनर्जी, निफ्टी पीएसयू बैंक , निफ्टी ऑटो गिरावट के साथ बंद हुए।

सेंसेक्स पैक में ट्रेंट, इंडिगो, इन्फोसिस, एनटीपीसी, पावर ग्रिड, इटरनल, टेक महिंद्रा, एचयूएल टेक, एचडीएफसी बैंक, कोटक महिंद्रा बैंक, सन फार्मा, आईटीसी, एशियन पेंट्स, टीसीएस, आईसीआईसीआई बैंक, एलएंडटी, एचयूएल और टाइटन के शेयर



लाभ में रहे थे। एसबीआई, एमएंडएम, अल्ट्राटेक सीमेंट, टाटा स्टील, एक्सिस बैंक, बीईएल, रिलायंस इंडस्ट्रीज, बजाज फिनसर्व, भारती एयरटेल और मारुति सुजुकी के शेयर गिरे। वहीं इससे पहले आज सुबह शुरुआत में सेंसेक्स 168.03 अंक बढ़कर 74,319.07 के स्तर पर खुला। वहीं निफ्टी भी 44.55 अंकों की बढ़त के साथ 22,981.30 पर कारोबार कर रहा था

रुपया बढ़त के साथ बंद

मुंबई ।



अमेरिकी डॉलर के मुकाबले भारतीय रुपया शुक्रवार को 30 पैसे की बढ़त के साथ ही 94.95 पर बंद हुआ। वहीं आज सुबह रुपया शुक्रवार को शुरुआती कारोबार में सात पैसे की बढ़त के साथ 95.19 प्रति डॉलर पर पहुंच गया। अमेरिकी डॉलर में कमजोरी और अमेरिकी कोष बॉन्ड के प्रतिफल में गिरावट के बीच घरेलू मुद्रा को समर्थन मिला। हालांकि, कच्चे तेल की बढ़ती कीमतों ने रुपये की बढ़त को सीमित रखा। विदेशी मुद्रा कारोबारियों ने बताया कि विदेशी पूंजी के निरंतर प्रवाह और तेल आयात का बोझ कम होने से रुपये को मजबूती मिलने का आधार तैयार होगा। डॉलर के मुकाबले रुपये की विनिमय दर के निकट अवधि में 94.75 से 95.75 के बीच रहने का अनुमान है। अंतरबैंक विदेशी मुद्रा विनिमय बाजार में रुपया 95.21 प्रति डॉलर पर खुला। इसके बाद इसमें मजबूती आई और यह 95.19 प्रति डॉलर पर पहुंच गया जो पिछले बंद भाव के मुकाबले सात पैसे की बढ़त है। रुपया गुरुवार को दो पैसे की बढ़त के साथ 95.26 प्रति डॉलर पर बंद हुआ था। इस बीच दुनिया की छह प्रमुख मुद्राओं के मुकाबले अमेरिकी डॉलर की स्थिति दर्शाने वाला डॉलर सूचकांक 0.27 प्रतिशत फिसलकर 101.75 पर आ गया।

त्योहारों से पहले चीनी और प्याज की कीमतों में भारी उछाल

खुदरा बाजारों में प्याज की कीमत 60-65, जबकि चीनी 55-60 रुपए प्रति किलो

नई दिल्ली ।

दीपावली और छठ जैसे बड़े त्योहारों के नजदीक आने के बावजूद, आम जनता को चीनी और प्याज की बढ़ती कीमतों से कोई राहत नहीं मिल पा रही है। पिछले चार महीनों में इन दोनों आवश्यक खाद्य वस्तुओं के दाम आसमान छू रहे हैं, जिससे रसोई का बजट गड़बड़ा गया है।

खुदरा बाजारों में प्याज की कीमत अभी 60-65 रुपये प्रति किलोग्राम के दायरे में बनी हुई है, जबकि चीनी 55-60 रुपये प्रति किलोग्राम पर बिक रही है। कुछ विशेष ब्रांड की चीनी तो 62 रुपये प्रति किलोग्राम तक पहुंच गई है। भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) की ताजा मासिक रिपोर्ट के अनुसार, देश में जरूरी खाद्य वस्तुओं की कीमतों में उतार-चढ़ाव का दौर लगातार जारी है। विशेषज्ञों और जानकारों के अनुसार, रबी की फसल के कम भंडार और असमान मानसून के कारण खरीफ की नई फसल की आवक को लेकर बाजार में अनिश्चितता बनी हुई है। इसी आपूर्ति में गिरावट के चलते जून से सितंबर के बीच प्याज की कीमतें करीब 85 प्रतिशत तक उछल गईं, वहीं जुलाई और अगस्त में चीनी के दामों में भी 34 प्रतिशत की भारी तेजी दर्ज की गई। प्याज की फसलों को इस साल महाराष्ट्र जैसे प्रमुख उत्पादक राज्य में सूखे और फिर कमजोर मानसून की वजह से नुकसान पहुंचा है, जिससे सुरक्षित भंडार काफी कम हो गया है।

न्यूट्रास्युटिकल उत्पादों के 98 फीसदी विज्ञापन भ्रामक,एएससीआई रिपोर्ट में खुलासा

परिषद ने 61 में से 60 विज्ञापनों को आचार संहिता का उल्लंघन करते पाया

नई दिल्ली ।

भारतीय विज्ञापन मानक परिषद (एएससीआई) की एक हालिया रिपोर्ट ने न्यूट्रास्युटिकल उत्पादों के विज्ञापनों में व्याप्त भ्रामक दावों का बड़ा खुलासा किया है। अ पिल फॉर थॉट शीर्षक वाली इस रिपोर्ट के मुताबिक, जुलाई से सितंबर 2023 के बीच जांचे गए 61 विज्ञापनों में से चौंकाने वाले 60 विज्ञापन एएससीआई की आचार संहिता का उल्लंघन करते पाए गए, जो उपभोक्ताओं को झूठी उम्मीदें और निराधार वादे बेचकर गुमराह कर रहे थे। एएससीआई की इस गहन जांच ने न्यूट्रास्युटिकल क्षेत्र में व्यापक अनियमितताओं को उजागर किया है।

रिपोर्ट के अनुसार इन विज्ञापनों में 60 दिन में छह किलो वजन घटाएं, आपकी त्वचा सात साल जवां दिखेगी और अस्थमा या पीसीओडी को उलट दें जैसे नाटकीय दावे किए गए थे, जिनके समर्थन में कोई पर्याप्त वैज्ञानिक प्रमाण मौजूद नहीं थे। जांच में यह सामने आया कि कुल 29 विज्ञापनदाताओं ने तो अपनी आपत्तियों को चुनौती भी नहीं दी, जबकि बाकी 31 विज्ञापनदाता अपने दावों को साबित करने के लिए ठोस सबूत पेश करने में नाकाम रहे। रिपोर्ट में वजन प्रबंधन, त्वचा देखभाल, एंटी-एजिंग और श्वास संबंधी समस्याओं के उपचार से जुड़े दावे प्रमुखता से शामिल थे। इन विज्ञापनों में अक्सर तय समयसीमा के भीतर आश्चर्यजनक परिणामों का वादा किया गया, साथ ही नाटकीय पहले और बाद की तस्वीरों का भी इस्तेमाल किया गया, जैसे फेफड़ों को काले रंग से गुलाबी होते हुए दिखाना। कुछ ब्रांडों ने अपने उत्पादों को अस्थमा और सीओपीडी जैसी गंभीर बीमारियों के समाधान के रूप में भी प्रस्तुत किया, यह सुझाव देते हुए कि ये प्रदूषण और धूम्रपान के हानिकारक प्रभावों को उलट सकते हैं।

इसके अलावा, किसी खास सामग्री पर हुए शोध का उपयोग पूरे उत्पाद के फायदों को साबित करने के लिए किया गया, जबकि तैयार उत्पाद के विज्ञापन में बताए गए नतीजे देने के कोई ठोस प्रमाण नहीं थे। एएससीआई की एक अधिकारी ने इस स्थिति पर गहरी चिंता जताते हुए कहा कि उपभोक्ता इन उत्पादों पर विश्वास करते हैं, इसलिए विज्ञापनों में किए गए दावे उपलब्ध सबूतों के अनुरूप होने चाहिए।

उन्होंने जोर दिया कि इससे उपभोक्ता सोच-समझकर फैसले ले सकेंगे और ऐसे वादों से उनका भरोसा नहीं टूटेगा, जिनके समर्थन में पर्याप्त प्रमाण नहीं हैं। रिपोर्ट ने यह भी इंगित किया कि वेलनेस उत्पादों और डॉक्टरों द्वारा निर्धारित दवाओं के बीच का अंतर धुंधला होता जा रहा है, जिससे उपभोक्ताओं में भ्रम बढ़ सकता है। एएससीआई ने न्यूट्रास्युटिकल विज्ञापनों में दावों के समर्थन में सबूतों की कमी की बढ़ती चिंताओं के कारण स्वतः संज्ञान लेते हुए यह जांच शुरू की थी।

अदाणी यूरोप में 27,000 करोड़ में खरीदेंगे इवोस टर्मिनल्स

कंपनी का लक्ष्य वैश्विक समुद्री व्यापार में दबदबा बढ़ाना

मुंबई ।

अदाणी ग्रुप की प्रमुख कंपनी अदाणी पोर्ट्स एंड स्पेशल इकोनॉमिक जोन ने अंतरराष्ट्रीय बाजार में अपनी उपस्थिति मजबूत करने के लिए एक बड़ा रणनीतिक कदम उठाया है।

कंपनी ने पैन-यूरोपीय लिक्विड स्टोरेज और टर्मिनल ऑपरेटर इवोस टर्मिनल्स का अधिग्रहण करने के लिए लगभग 3 अरब यूरो की बाइंडिंग ऑफर पेश की है।

यह कदम अदाणी पोर्ट्स की वैश्विक विस्तार योजना का हिस्सा है, जिसका उद्देश्य यूरोपीय बाजार में अपनी पकड़ मजबूत करना है। इग्नियो इंफ्रास्ट्रक्चर पार्टनर्स के स्वामित्व वाली इवोस टर्मिनल्स यूरोप की सबसे बड़ी लिक्विड स्टोरेज कंपनियों में से एक है। इसके पास 5 यूरोपीय देशों के 7 बंदरगाहों पर 8 बड़े टैंक टर्मिनल्स हैं ।

जिनकी कुल भंडारण क्षमता 6.4 मिलियन क्यूबिक मीटर है। अदाणी पोर्ट्स का यह ऑफर बदलते वैश्विक परिदृश्य और ऊर्जा सुरक्षा की चिंताओं के बीच यूरोप के बाजार में अपनी स्थिति मजबूत करने का एक प्रयास है। यह बाइंडिंग ऑफर एक कड़ी प्रतिस्पर्धी नीलामी प्रक्रिया के तहत दिया गया है, जिसमें केकेआर, ईक्यूटी और मैक्वेरी जैसे कई वैश्विक दिग्गज भी शामिल थे। इस डील पर अंतिम फैसला कुछ हफ्तों में आने की उम्मीद है।

यह विदेशी विस्तार अदाणी पोर्ट्स द्वारा यूके-आधारित एसोसिएटेड ब्रिटिश पोर्ट्स की बिड में पीछे हटने के तुरंत बाद आया है।

दवा निर्यात पहली छमाही में 4.9 फीसदी बढ़कर 16.14 अरब डॉलर

यूरोप, आसियान और लातिन अमेरिका से मजबूत मांग ने दिया सहारा

नई दिल्ली ।

चालू वित्त वर्ष 2026-27 की पहली छमाही में भारत का दवा निर्यात सालाना आधार पर 4.9 प्रतिशत बढ़कर 16.14 अरब डॉलर हो गया है।

भारतीय दवा निर्यात संवर्धन परिषद (फार्मेक्सिल) के आंकड़ों के अनुसार, यूरोपीय, आसियान और लातिन अमेरिकी बाजारों से मजबूत मांग ने इस वृद्धि को गति दी है, जबकि अमेरिका को निर्यात की रफ्तार कुछ धीमी रही। फार्मेक्सिल द्वारा जारी आंकड़ों के मुताबिक यूरोप को निर्यात में 9.66 प्रतिशत की प्रभावशाली वृद्धि दर्ज की गई, जो कुल दवा निर्यात का 20.38 प्रतिशत रहा। इसी अवधि में आसियान क्षेत्र में 21.54 प्रतिशत और लातिन अमेरिका व कैरेबियाई देशों में 16.58 प्रतिशत की उल्लेखनीय वृद्धि देखी गई। अफ्रीका को दवा निर्यात में भी 6.48 प्रतिशत की बढ़ोतरी हुई। यह पिछले वित्त वर्ष 2025-26 की समान अवधि में दर्ज 15.38 अरब डॉलर के मुकाबले एक महत्वपूर्ण उछाल है। परिषद के अे धिकारी ने बताया कि गुणवत्तापूर्ण और किफायती दवाओं के बड़े पैमाने पर विनिर्माण के दम पर भारत ने वैश्विक स्तर पर अपनी पहचान बनाई है।

भारतीय कंपनियों की विदेशी उधारी बढ़ी, अगस्त में 8.13 डॉलर अरब के आवेदन

फ्लिपकार्ट, पीएफसी, आरईसी व इंडियन ऑयल कॉरपोरेशन ने भी की बड़ी उधारी की मांग

मुंबई ।

भारतीय कंपनियों द्वारा विदेशी वाणिज्यिक उधारी (ईसीबी) के लिए दाखिल आवेदनों की कुल राशि अगस्त में मासिक आधार पर 5.6 प्रतिशत बढ़कर 8.13 अरब डॉलर तक पहुंच गई। भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) के आंकड़ों से यह जानकारी मिली है, जो वैश्विक पूंजी तक कंपनियों की बढ़ती पहुंच को दर्शाती है।

जुलाई में यह आंकड़ा 7.69 अरब डॉलर था। अगस्त में दाखिल आवेदनों में कई प्रमुख कंपनियों की बड़ी उधारी मांग शामिल थी। इनमें फ्लिपकार्ट इंटरनेट ने तीन साल के लिए 1.14 अरब डॉलर का कर्ज आगे ऋण देने के लिए मांगा, जबकि पावर फाइनेंस कॉरपोरेशन (पीएफसी) ने सामान्य कारोबारी जरूरतों के लिए चार साल नौ महीने की अवधि के लिए 77.5 करोड़ डॉलर का आवेदन दिया। इसी तरह, आरईसी और इंडियन ऑयल कॉरपोरेशन (आईओसी) ने भी क्रमशः सामान्य कारोबारी जरूरतों और मौजूदा इकाइयों के विस्तार के लिए 50-50 करोड़ डॉलर की उधारी के इरादे दाखिल किए।

यह बढ़ोतरी ऐसे समय में हुई है जब आरबीआई ने विदेशी पूंजी प्रवाह बढ़ाने और देश की बाह्य स्थिति मजबूत करने के लिए जून में विशेष एफसीएनआर(बी) जैसी सुविधाएं शुरू की थीं। हालांकि, मजबूत प्रतिक्रिया के कारण एफसीएनआर(बी) सुविधा 31 अगस्त को समय से पहले बंद कर दी गई थी, लेकिन ईसीबी और विदेशी मुद्रा में परिवर्तनीय बॉन्ड सुविधा 31 दिसंबर तक खुली है, जिससे आगे भी पूंजी प्रवाह की उम्मीद है।

अल नीनो के खतरे के बावजूद भारत की आर्थिक वृद्धि पर आईएमएफ का भरोसा

नई दिल्ली ।

अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (आईएमएफ) ने सुपर अल नीनो के कारण मौसम में संभावित बदलावों से उत्पन्न जोखिमों के बावजूद भारत के आर्थिक विकास पर अपना पूरा भरोसा जताया है। आईएमएफ के अनुसार भारत की अर्थव्यवस्था वैश्विक विकास का एक महत्वपूर्ण आधार बनी हुई है, भले ही खराब मौसम से जुड़े कुछ जोखिम मौजूद हों। आईएमएफ ने यह भी स्पष्ट किया है कि सुपर अल नीनो जैसी घटनाओं का असर अभी तक भारत में सीधे तौर पर दिखाई नहीं दिया है, लेकिन भविष्य में इससे फसलों के उत्पादन में कमी आ सकती है, जिसके परिणामस्वरूप खाने-पीने की चीजें महंगी होने की आशंका है। आईएमएफ के संचार निदेशक ने एक प्रेस कॉन्फ्रेंस में बताया कि भारत के सामने मौसम से जुड़े कई बड़े जोखिम मौजूद हैं, हालांकि अभी तक इनका मौजूदा आर्थिक स्थिति पर कोई वास्तविक असर नहीं पड़ा है। विशेषज्ञों के अनुसार, यदि ये जोखिम वास्तविक रूप में सामने आते हैं, तो परिवारों की खरीदारी की क्षमता (परचेजिंग पावर) कम हो सकती है। आईएमएफ ने अपनी अक्टूबर 2026 की वर्ल्ड इकोनॉमिक आउटलुक रिपोर्ट में भारत के लिए 7 प्रतिशत विकास दर का अनुमान लगाया था। चूंकि अल नीनो से जुड़े गंभीर मौसमी जोखिम अभी तक पूरी तरह से सामने नहीं आए हैं, इसलिए आईएमएफ जनवरी 2027 में जारी होने वाले अपने अगले वर्ल्ड इकोनॉमिक आउटलुक अपडेट में भारत की इस विकास दर के अनुमान की दोबारा समीक्षा करेगा। यह समीक्षा इस बात पर निर्भर करेगी कि आने वाले महीनों में सुपर अल नीनो से जुड़ा मौसमी जोखिम कितना गहराता है। सुपर अल नीनो का तात्पर्य भूमध्यरेखीय प्रशांत महासागर के पानी का सामान्य से बहुत ज्यादा गर्म हो जाना है। यह स्थिति तब बनती है जब समुद्र की सतह का तापमान सामान्य से 2 डिग्री सेल्सियस या उससे भी अधिक बढ़ जाता है। भारत के लिए इसे आमतौर पर नकारात्मक माना जाता है, क्योंकि यह दक्षिण-पश्चिम मानसून को कमजोर कर देता है, जिससे देश के कई हिस्सों में सूखे की स्थिति बन सकती है ।

धनतेरस से पहले सोने की कीमतों में गिरावट से खरीदार असमंजस में

अमेरिकी बॉन्ड यील्ड में उछाल और भू-राजनीतिक तनाव ने बिगाड़ा खेल

नई दिल्ली ।

धनतेरस और शादी के शुभ अवसर से ठीक पहले सोने की कीमतों में आई भारी गिरावट ने खरीदारों को असमंजस में डाल दिया है। जनवरी में 1.75 लाख रुपये प्रति 10 ग्राम के उच्च स्तर को छूने वाला सोना अब 1.43 लाख रुपये के करीब आ गया है, यानी करीब 20 फीसदी की कमी।

इस अप्रत्याशित गिरावट ने जहां एक ओर निवेशकों के लिए अवसर पैदा किया है, वहीं दूसरी ओर यह सवाल भी खड़ा कर दिया है कि क्या यह खरीदारी का सही समय है या अभी और इंतजार करना चाहिए। सोने की कीमतों में इस बड़ी गिरावट के पीछे कई वैश्विक आर्थिक और भू-राजनीतिक कारण जिम्मेदार हैं। सबसे प्रमुख वजह अमेरिका के 10 साल के सरकारी बॉन्ड की यील्ड में रिकॉर्ड बढ़ोतरी है, जो 5 फीसदी से भी ऊपर चल रही है। जब अमेरिकी सरकार द्वारा जारी किए गए इन बॉन्ड पर इतना आकर्षक और सुरक्षित रिटर्न मिलता है, तो बड़े निवेशक सोने जैसे सुरक्षित निवेश से पैसा निकालकर बॉन्ड में लगाना पसंद करते हैं, क्योंकि सोने पर कोई ब्याज नहीं मिलता।

इस शिफ्ट से अंतर्राष्ट्रीय बाजार में सोने की मांग घटती है और उसकी कीमत पर दबाव बनता है। इसके अलावा कच्चे तेल की बढ़ती कीमतें और अमेरिका में बढ़ती महंगाई का डर भी सोने की चमक फीकी कर रहा है। ईरान युद्ध के तनाव के कारण महंगा हुआ कच्चा तेल अमेरिकी अर्थव्यवस्था में महंगाई बढ़ा रहा है।

इसे नियंत्रित करने के लिए अमेरिकी केंद्रीय बैंक फेडरल रिजर्व ने ब्याज दरें ऊंची रखी हैं, जिससे बॉन्ड यील्ड को और बढ़ावा मिला है।

जानकारों का मानना है कि जब तक कच्चे तेल की कीमतें स्थिर नहीं होतीं और महंगाई के आंकड़े नीचे नहीं आते, तब तक अमेरिकी बॉन्ड की यील्ड ऊंची बनी रह सकती है। इसका सीधा मतलब है कि अगले कुछ महीनों या साल भर तक सोने के भाव में तेजी से उछाल की संभावना कम है।

एनआईआईटी लर्निंग सिस्टम्स ने ब्लू वॉटर लर्निंग में सौ फीसदी हिस्सेदारी खरीदी

मुंबई ।

एनआईआईटी लर्निंग सिस्टम्स ने अमेरिकी राज्य टेक्सास की ब्लू वॉटर लर्निंग में सौ फीसदी हिस्सेदारी खरीद ली है। यह सौदा उसकी अनुषंगी एनआईआईटी यूएसए के जरिए 1.76 करोड़ डॉलर तक में हुआ है। इसमें अगले पांच वर्षों के दौरान प्रदर्शन के आधार पर दिए जाने वाले अतिरिक्त भुगतान भी शामिल हैं। एनआईआईटी लर्निंग सिस्टम्स ने अमेरिका के टेक्सास स्थित ब्लू वॉटर लर्निंग में 100 प्रतिशत हिस्सेदारी करीब 167 करोड़ रुपये में हासिल की है। कंपनी ने बताया कि यह अधिग्रहण उसकी पूर्ण स्वामित्व वाली अनुषंगी कंपनी एनआईआईटी (यूएसए) के माध्यम से किया गया है। इस सौदे का कुल मूल्य 1.76 करोड़ डॉलर (करीब 167 करोड़ रुपये) तक है। इसमें अगले पांच वर्षों के दौरान प्रदर्शन के आधार पर किए जाने वाले अतिरिक्त भुगतान भी शामिल हैं। कंपनी ने कहा कि एनआईआईटी लर्निंग सिस्टम्स लिमिटेड ने ब्लू वॉटर लर्निंग एलएलसी में 100 प्रतिशत हिस्सेदारी का अधिग्रहण किया है। वर्ष 2003 में स्थापित ब्लू वॉटर लर्निंग का मुख्यालय टेक्सास के प्लानो में है। यह कंपनी संगठनों को सीखने और प्रतिभा विकास से जुड़े बदलावों की रणनीति बनाने और उन्हें लागू करने में मदद करती है।

ब्लू वॉटर अपने ग्राहकों को रणनीति विकसित करने, समाधान लागू करने और दीर्घकालिक सफलता के लिए जरूरी संगठनात्मक बदलावों में सहायता देती है।



फिल्म ओम में दमदार पुलिस अफसर के किरदार में नजर आएंगी अभिनेत्री साई पल्लवी

भारतीय सिनेमा के जाने-माने निर्देशक राजकुमार पेरियासामी की आगामी बहुप्रतीक्षित एक्शन थ्रिलर फिल्म ओम को लेकर दर्शकों के बीच जबरदस्त उत्सुकता बनी हुई है। इस फिल्म में तमिल सिनेमा के सुपरस्टार धनुष और मलयालम सिनेमा के महानायक ममूटी मुख्य भूमिकाओं में नजर आने वाले हैं। इसी बीच निर्माताओं ने फिल्म की प्रमुख अभिनेत्री साई पल्लवी के किरदार से पर्दा हटाकर प्रशंसकों के उत्साह को कई गुना बढ़ा दिया है। साई पल्लवी इस फिल्म में नित्या रेड्डी नाम की एक जांबाज और कर्तव्यनिष्ठ पुलिस अधिकारी की भूमिका निभाती हुई दिखाई देंगी। इस घोषणा के बाद से ही साई पल्लवी के नए और सख्त अवतार को देखने के लिए दर्शकों की बेताबी साफ नजर आ रही है। दिग्गज अभिनेता नसीरुद्दीन शाह की मौजूदगी भी इस प्रोजेक्ट को और अधिक भव्य और प्रासंगिक बनाती है। फिल्म के शीर्षक के साथ चैप्टर 1 जोड़ा गया है, जो इस बात का स्पष्ट संकेत देता है कि यह एक बहुस्तरीय कहानी है और भविष्य में इसका सीक्वल भी दर्शकों के सामने आ सकता है। कुछ समय पहले जारी किए गए झलक वीडियो (टीजर) से यह साफ हुआ था कि फिल्म की मुख्य कहानी जंगलों में अवैध रूप से लाल चंदन की कटाई करने वाले मजदूरों और उनके संघर्षपूर्ण जीवन के इर्द-गिर्द घूमती है। फिल्म में धनुष एक लकड़हारे की भूमिका निभा रहे हैं। कहानी में मुख्य मोड़ तब आता है जब पुलिस अधिकारी अवैध कटाई में शामिल मजदूरों को हथियार के बल पर बंदी बना लेते हैं और धनुष उनके रक्षक बनकर सामने आते हैं। फिल्म की रिलीज डेट को लेकर भी मेकर्स ने काफी सूझबूझ से निर्णय लिया है। पहले इस फिल्म को अक्टूबर महीने में प्रदर्शित करने की योजना बनाई गई थी, लेकिन अभिनेता धनुष ने सुपरस्टार रजनीकांत की फिल्म जेलर 2 के प्रति सम्मान प्रकट करते हुए अपनी फिल्म की रिलीज को आगे बढ़ा दिया। इसके साथ ही, दिवाली के अवसर पर अन्य बड़ी फिल्मों के प्रदर्शन को ध्यान में रखते हुए किसी भी तरह के व्यावसायिक टकराव से बचने के लिए निर्माताओं ने 20 नवंबर की तिथि को अंतिम रूप दिया है। धनुष और ममूटी जैसे दो विशाल अभिनेताओं का पहली बार एक साथ किसी प्रोजेक्ट में काम करना इस फिल्म को इस साल की सबसे बड़ी और बहुप्रतीक्षित फिल्मों की सूची में शामिल करता है।

लिटिल थॉमस को लेकर सुर्खियों में रसिका

अभिनेत्री रसिका दुग्गल इन दिनों अपनी नई फिल्म लिटिल थॉमस को लेकर सुर्खियों में हैं। फिल्म के संदर्भ में बात करते हुए उन्होंने कहा कि आज के आधुनिक दौर में भले ही तकनीक के सहारे बड़े बजट और भव्य सेट वाली फिल्में बन रही हों, लेकिन आम जिंदगी से जुड़ी सीधी और सरल कहानियों की अपनी एक अलग अहमियत होती है। फिल्म की कहानी एक छोटे बच्चे थॉमस की बाल सुलभ जिज्ञासा और उसकी मासूमियत के इर्द-गिर्द घूमती है। वह जानना चाहता है कि बच्चे कहां से आते हैं और अपने लिए एक भाई या बहन की चाहत रखता है। रसिका दुग्गल के अनुसार, बच्चों के सवालों और उनकी उत्सुकता को कभी कम नहीं आंकना चाहिए। दुनिया को बच्चों के नजरिए से देखना एक बेहद खूबसूरत अनुभव है। इस फिल्म में बचपन, पारिवारिक रिश्तों और वैवाहिक जीवन के उतार-चढ़ाव को सहज ढंग से दर्शाया गया है।



फिल्म सेट पर महिलाओं के मतभेद की धारणा को राधिका आप्टे ने बताया गलत

डिजिटल क्रिएटर से लेकर बॉलीवुड तक अपनी अदाकारी का लोहा मनवाया

बॉलीवुड की बहुमुखी अभिनेत्री राधिका आप्टे जल्द ही आगामी डिजिटल वेब सीरीज अक्का में नजर आने वाली हैं। इस सीरीज में उनके साथ दक्षिण भारतीय सिनेमा की प्रसिद्ध अभिनेत्री कीर्ति सुरेश भी मुख्य भूमिका निभा रही हैं। हाल ही में इस सीरीज के प्रचार के सिलसिले में बात करते हुए राधिका आप्टे ने फिल्म सेट पर महिला कलाकारों के आपसी संबंधों को लेकर वर्षों से चली आ रही रूढ़िवादी धारणाओं पर खुलकर अपनी बात रखी। उन्होंने उस प्रचलित सोच को पूरी तरह से खारिज कर दिया, जिसमें यह दावा किया जाता है कि जब दो महिला कलाकार किसी प्रोजेक्ट में एक साथ काम करती हैं, तो उनके बीच अक्सर अनबन, मनमुटाव या झगड़े होते हैं। राधिका आप्टे का मानना है कि किसी भी कार्यस्थल का माहौल किसी व्यक्ति के लिंग से तय नहीं होता, बल्कि यह लोगों के आपसी तालमेल और व्यवहार पर निर्भर करता है। उन्होंने कहा कि यह एक बेहद पुरानी और आधारहीन सोच है कि महिलाएं आपस में तालमेल नहीं बैठा पातीं। अपने अनुभव के आधार पर उन्होंने कहा कि कई बार पुरुषों में महिलाओं की तुलना में अधिक असुरक्षा की भावना देखी जाती है। हालांकि, उन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि यह मुद्दा पुरुष या महिला होने का नहीं है, बल्कि यह विशुद्ध रूप से व्यक्तिगत संबंधों और आपसी समझ का विषय है। किसी भी क्षेत्र में आप कुछ लोगों के साथ बहुत सहज महसूस करते हैं और आसानी से घुल-मिल जाते हैं, जबकि कुछ लोगों के साथ आपका मानसिक तालमेल नहीं बैठ पाता। वेब सीरीज अक्का के शूटिंग सेट का अनुभव साझा करते हुए अभिनेत्री ने बताया कि वहां का माहौल अत्यंत सकारात्मक और उत्साहवर्धक था। सेट पर कैमरे के सामने काम करने वाली स्टारकास्ट और कैमरे के पीछे काम करने वाली तकनीकी टीम में महिलाओं और पुरुषों की लगभग समान भागीदारी थी। उन्होंने कहा कि सेट पर एक बहुत ही खूबसूरत सिस्टरहुड यानी बहनों जैसा माहौल था, जिसने पूरी शूटिंग प्रक्रिया को बहुत सहज और आनंददायक बना दिया। इसके साथ ही राधिका आप्टे ने यह भी रेखांकित किया कि काम के सिलसिले में किसी के साथ अच्छा तालमेल होने का अर्थ यह बिल्कुल नहीं है कि आप उनके बहुत गहरे मित्र बन जाएं। बिना करीबी दोस्त बने भी एक पेशेवर और गरिमापूर्ण माहौल में बेहतरीन काम किया जा सकता है। उल्लेखनीय है कि वेब सीरीज अक्का एक थ्रिलर गैंगस्टर ड्रामा है, जिसमें महिलाओं को मुख्यधारा में दिखाया गया है। इस सीरीज का निर्देशन धर्मराज शेट्टी ने किया है, जो इस शो के लेखक भी हैं। यह कहानी 1980 के दशक की पृष्ठभूमि पर आधारित एक काल्पनिक दुनिया को दर्शाती है, जिसे पीढ़ियों से महिलाओं ने ही बनाया, चलाया और संरक्षित रखा है। यह बहुप्रतीक्षित सीरीज 30 अक्टूबर को ओटीटी प्लेटफॉर्म पर रिलीज होने जा रही है।

अभिनेत्री पवित्रा पुनिया ने एक महत्वपूर्ण संदेश किया साझा

विभिन्न लोकप्रिय धारावाहिकों में अपनी सशक्त उपस्थिति दर्ज कराने वाली अभिनेत्री पवित्रा पुनिया ने देश में सामाजिक सौहार्द, शांति और धार्मिक एकता बनाए रखने के लिए एक महत्वपूर्ण संदेश साझा किया है। उन्होंने सभी नागरिकों से अपील की है कि वे अपने-अपने धर्म से सच्चा प्रेम करें, लेकिन साथ ही दूसरों के धार्मिक अकीदों और आस्थाओं का भी पूरा सम्मान करें। अपने बयान में अभिनेत्री ने हाल ही में देश के विभिन्न हिस्सों में हुए विरोध-प्रदर्शनों और आंदोलनों के कारण अर्थव्यवस्था पर पड़े प्रतिकूल प्रभावों पर गंभीर चिंता व्यक्त की है। उन्होंने आंकड़े साझा करते हुए बताया कि त्योहारों के व्यस्त सीजन के दौरान ऐसे प्रदर्शनों के कारण व्यापारिक गतिविधियों को लगभग 3000 करोड़ रुपये का भारी आर्थिक नुकसान उठाना पड़ा है, जो एक विकासशील देश के लिए काफी चिंताजनक है। पवित्रा पुनिया ने इस बात पर दुख व्यक्त किया कि कई लोग बुनियादी तथ्यों को समझे बिना ऐसी आर्थिक समस्याओं और आंकड़ों का सोशल मीडिया पर मजाक उड़ाते हैं। उन्होंने देश की जमीनी हकीकत पर ध्यान आकर्षित करते हुए कहा कि जब कोई आम नागरिक दो वक्त की रोटी के लिए कड़ा संघर्ष कर रहा हो, तब इस तरह के गतिरोध देश के हित में नहीं हो सकते। उन्होंने युवा पीढ़ी (जेन जी) का मार्गदर्शन करते हुए कहा कि सोशल मीडिया पर सक्रिय कुछ प्रभावकारियों (इन्फ्लुएंसर्स) द्वारा फैलाई जा रही मनगढ़ंत बातों और भ्रामक जानकारियों से युवाओं को बचना चाहिए। युवाओं में अपार क्षमता और ज्ञान है, इसलिए उन्हें किसी के बहकावे में आकर अपनी सोच को दूषित नहीं करना चाहिए। एक सनातनी हिंदू होने पर गर्व व्यक्त करते हुए पवित्रा ने स्पष्ट किया कि उन्हें किसी भी अन्य समुदाय या धर्म के लोगों से कोई शिकायत नहीं है। उन्होंने भारत के सामाजिक ताने-बाने को याद दिलाते हुए कहा कि बांटो और राज करो की विभाजनकारी सोच कुछ स्वार्थी तत्वों की देन है, जो देश की मूल भावना के विपरीत है। अपने व्यक्तिगत जीवन का उदाहरण देते हुए उन्होंने कहा कि उनके आसपास कई मुस्लिम परिवार रहते हैं और सभी लोग आपस में प्रेम, भाईचारे और शांति के साथ मिलकर रहते हैं। भारत की असली ताकत उसकी सांस्कृतिक विविधता और एकता का अनूठा बंधन है, जिसे हर कीमत पर सुरक्षित और अक्षुण्ण रखा जाना चाहिए।



इंडो-रशियन फिल्म से अंतरराष्ट्रीय स्तर पर कदम रखेंगी सैयामी खेर, भाषा की सीमाओं से परे जा किया काम



अभिनेत्री सैयामी खेर जल्द ही एक इंडो-रशियन ड्रामा फिल्म के जरिए अंतरराष्ट्रीय सिनेमा में अपना पदार्पण करने जा रही हैं। इस अंतरराष्ट्रीय प्रोजेक्ट के अपने अनुभवों को साझा करते हुए सैयामी ने बताया कि एक विदेशी क्रू के साथ मॉस्को में शूटिंग करना उनके लिए बेहद नया और रोमांचक अनुभव था। उन्होंने कहा कि अलग-अलग देशों और संस्कृतियों के लोगों के साथ काम करने से कहानी को देखने और समझने का एक नया वैश्विक नजरिया मिलता है। सैयामी खेर के अनुसार भाषा और देश की सीमाओं से परे जाकर काम करना किसी भी कलाकार के लिए सीखने का बहुत बड़ा अवसर होता है। हालांकि उन्होंने फिल्म की विस्तृत कहानी का खुलासा नहीं किया, लेकिन बताया कि यह एक मजबूत महिला चरित्र पर आधारित गहन ड्रामा फिल्म होगी। इस फिल्म का निर्देशन रूसी निर्देशक मैक्सिम कुजनेत्सोव कर रहे हैं। सैयामी इससे पहले निर्देशक प्रियदर्शन की बहुचर्चित क्राइम थ्रिलर फिल्म हैवान में नजर आई थीं, जिसमें उनके साथ अक्षय कुमार और सैफ अली खान मुख्य भूमिकाओं में थे।

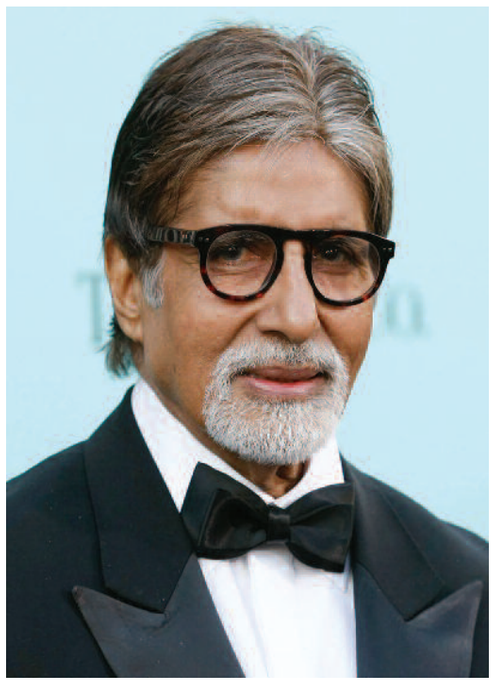


मां बनने के बाद शरीर में आए बदलावों और मानसिक संघर्ष पर करिश्मा तन्ना का छलका दर्द

हाल ही में मातृपद प्राप्त करने वाली मशहूर अभिनेत्री करिश्मा तन्ना ने प्रसव के बाद महिलाओं के शरीर में होने वाले प्राकृतिक बदलावों और उससे जुड़ी मानसिक चुनौतियों पर बेहद संवेदनशीलता के साथ अपनी बात रखी है। उन्होंने स्वीकार किया है कि एक नन्हें शिशु को जन्म देने के बाद अपने बदले हुए शरीर को स्वीकार करना और उसके साथ सामंजस्य बिठाना कभी-कभी काफी कठिन और थकाऊ साबित होता है। अभिनेत्री ने अपने दिल के उद्गार व्यक्त करते हुए कहा कि कई बार उन्हें गर्भावस्था से पहले वाले अपने सुगठित शरीर की बेहद याद आती है। जब भी वह आईने के सामने खड़ी होती हैं, तो पेट का ढीलापन, त्वचा में आई शिथिलता और शारीरिक आकार में आए बदलाव उन्हें स्पष्ट नजर आते हैं। कपड़े खरीदने या तैयार होने की इच्छा भी ऐसे समय में अक्सर खत्म हो जाती है, जो किसी भी नई मां के लिए मानसिक रूप से काफी भारी पड़ सकता है। हालांकि, करिश्मा ने इस बात पर भी जोर दिया कि ऐसी स्थितियों में खुद के प्रति कठोर होने के बजाय दयालुता का भाव रखना बेहद आवश्यक है। उन्होंने खुद को यह याद दिलाया कि उनके शरीर ने एक नए जीवन को जन्म दिया है और उसके विकास के लिए नौ महीनों तक सुरक्षित माहौल प्रदान किया है। शिशु के जन्म को अभी केवल ढाई महीने का समय ही बीता है, ऐसे में इतनी जल्दी पुरानी शारीरिक संरचना को वापस पाने की उम्मीद लगाना बेमानी है। करिश्मा का मानना है कि एक महिला एक ही समय में मां बनने के सुखद अनुभव के प्रति आभारी भी हो सकती है और साथ ही अपने पुराने स्वरूप को खोने का दर्द भी महसूस कर सकती है। यह दोनों भावनाएं बिल्कुल स्वाभाविक हैं और इन्हें स्वीकार किया जाना चाहिए। अभिनेत्री ने जोर देकर कहा कि जिस कोमलता और प्रेम की हकदार मांएं अपने बच्चों को मानती हैं, वही कोमलता उन्हें खुद अपने प्रति भी दिखानी चाहिए। वे अब अपनी शारीरिक बनावट की आलोचना करने के बजाय अपने शरीर को ठीक होने, मजबूत बनने और पुन: सहज महसूस करने का पूरा समय दे रही हैं। उन्होंने अन्य सभी माताओं को सांत्वना देते हुए कहा कि वे इस मानसिक और शारीरिक सफर में बिल्कुल अकेली नहीं हैं। गौरतलब है कि करिश्मा तन्ना और उनके पति वरुण बंगेरा ने इस वर्ष अप्रैल में अपने पहले बच्चे के आगमन की खुशखबरी साझा की थी, जिसके बाद जुलाई में उनके घर एक सुंदर बेटे का जन्म हुआ।

परिणीति के समर्थन में उतरीं जेनिफर

वेब सीरीज शक : ट्रस्ट नो वन की सफलता के उपलक्ष्य में आयोजित एक पार्टी के दौरान का वीडियो इंटरनेट पर वायरल होने के बाद अभिनेत्री परिणीति चोपड़ा को सोशल मीडिया पर आलोचनाओं का सामना करना पड़ रहा था। वायरल वीडियो में ऐसा प्रतीत हो रहा था जैसे परिणीति ने अपनी सह-कलाकार जेनिफर विंगेट को फोटो क्लिक कराने के दौरान नजरअंदाज किया। अब इस विवाद पर खुद जेनिफर विंगेट ने चुप्पी तोड़ी है और परिणीति चोपड़ा का समर्थन करते हुए सभी तरह की अफवाहों और ट्रोलिंग को खारिज कर दिया है। जेनिफर विंगेट ने स्पष्ट किया कि उनके और परिणीति के बीच किसी भी प्रकार की अनबन नहीं है। उन्होंने बताया कि पार्टी के दौरान मंच पर जगह की कमी थी, जिसके कारण वे स्वयं पीछे हट गई थीं। परिणीति हमेशा उनके प्रति बहुत ही दयालु और सम्मानजनक रही हैं। जेनिफर ने लोगों से अपील की कि वे इस साधारण सी बात को गलत रूप देकर नकारात्मकता न फैलाएं।



अमिताभ बच्चन ने पारंपरिक अंधविश्वासों पर उठाए सवाल कहा- आधुनिक पीढ़ी मानती है केवल वैज्ञानिक तर्क

भारतीय सिनेमा के महानायक अमिताभ बच्चन अक्सर अपने विचारों और अनुभवों को अपने व्यक्तिगत ब्लॉग के माध्यम से प्रशंसकों के साथ साझा करते रहते हैं। अपने एक हालिया ब्लॉग पोस्ट में अमिताभ बच्चन ने समाज में गहराई से रची-बसी पुरानी परंपराओं, मान्यताओं और अंधविश्वासों पर गंभीर सवाल उठाए हैं। उन्होंने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि अधिकांश लोग बिना किसी तर्क या अर्थ को समझे केवल पीढ़ी-दर-पीढ़ी चली आ रही प्रथाओं का पालन करते आ रहे हैं। अपने इस लेखन में उन्होंने इस बात पर गहराई से प्रकाश डाला कि किस प्रकार समय बीतने के साथ इंसान की व्यक्तिगत इच्छाएं, सोच और जीवन को देखने का नजरिया पूरी तरह से बदल जाता है।

ब्लॉग में अमिताभ बच्चन ने लिखा कि इंसान के जीवन में एक ऐसा पड़ाव भी आता है जब वह उन सभी चीजों को दोबारा करना चाहता है, जिनसे उसे अतीत में रोका गया था। उन्होंने जीवन के बदलते चक्र का वर्णन करते हुए कहा कि एक समय में इंसान पूरी तरह से बेफिक्र होता है और फिर जीवन के उत्तरार्ध में वह दोबारा उसी बेफिक्री को पाना चाहता है। इंसान का दिमाग कई बार अजीब तरह से निर्णय लेता है, लेकिन यह प्रक्रिया इंसान को एक अलग प्रकार का मानसिक सुकून भी प्रदान करती है। परंपराओं पर सवाल उठाते हुए उन्होंने शनिवार को नाखून न काटने जैसी मान्यताओं का उदाहरण दिया। उन्होंने लिखा कि शनिवार को नाखून न काटने को अशुभ माना जाता है और यह प्रथा केवल अज्ञात डर के कारण आज भी समाज में अपनी जगह बनाए हुए है।

इसके साथ ही उन्होंने रत्नों से जुड़े अंधविश्वासों पर भी टिप्पणी की। उन्होंने लिखा कि लोग कहते हैं कि हरा पत्थर मत पहनो, बल्कि उसकी जगह एक हरे रंग की शॉल अपने पास रख लो। इस पर सवाल उठाते हुए अमिताभ बच्चन ने पूछा कि उस निर्दोष पत्थर ने किसी का क्या बिगाड़ा है और पास में रखी हरी शॉल किसी व्यक्ति के लिए किस प्रकार लाभदायक साबित हो सकती है। इन खोखले तर्कों पर प्रहार करते हुए उन्होंने कहा कि डर के कारण लोग आज्ञाकारी बनकर इन प्रथाओं को स्वीकार करते रहते हैं। हालांकि, महानायक ने यह भी स्वीकार किया कि आज की आधुनिक पीढ़ी अंधविश्वासों को आंख मूंदकर स्वीकार नहीं करती है। वर्तमान पीढ़ी किसी भी प्रथा को अपनाने से पहले उसके पीछे के वैज्ञानिक, शारीरिक और मानसिक कारणों को समझती है। आज के युवा केवल उन्हीं परंपराओं और जीवनशैली को अपनी दिनचर्या का हिस्सा बनाते हैं, जिनसे उनके स्वास्थ्य, मानसिक शांति और जीवन की गुणवत्ता में वास्तविक सुधार हो सके।